पात्र-परिचय

पुरुष—

१—सूत्रधार	नाटक-निर्देशक ।
२—कृष्ण	द्वारकाधीश, भगवान् ।
३—बलभद्र	कृष्णक जेठ भाय ।
४—प्रद्युम्न	कृष्णक पुत्र ।
५—नारद	देवर्षि ।
६—गरुड़	पक्षिराज ।
७—अनिरुद्ध	कृष्णक पौत्र, प्रद्युम्नक पुत्र, उषाक पति, नायक ।
८—चार	कृष्णक गुप्तचर ।
९—चार	चित्रलेखाक दूत ।
१०—बाण	बाणासुर, दैत्यराज, उषाक पिता ।
११—कुम्भाण्ड	बाणासुरक मन्त्री ।
१२—दौवारिक (द्वारी)	बाणासुरक द्वारपाल ।
१३—ज्वर	रोगराज, बाणक सहायक ।

स्त्री—

१—नटी	सूत्रधारक पत्नी ।
२—उषा	बाणासुरक पुत्री, नायिका ।
३—रामा	उषाक सखी, कुम्भाण्डक पुत्री ।
४—चित्रलेखा	उषाक सखी, गन्धर्वकन्या ।
५—दुर्गा	देवी भगवती दुर्गा ।
६—रुक्मिणी	कृष्णक पटरानी ।

म० म० हर्षनाथ झा विरचितम्

उषाहरणनाटकम्

[नान्दी - गीति]

राग हमन [गीत सं० - १]

जय जय कुमतिविनाशिनि देवि,
सभ अभिमत पुर तुअ पदसेवि ।
तनुरुचि निन्दित कुन्दक भास,
आननरुचि शशिबिम्ब उदास ।
आसन धवल कमल, शशि भाल,
श्वेत वसन लस, नयन विशाल ।
वीणादण्ड कलश धर हाथ
अक्षमाला वर पुस्तक साथ ।
हर्षनाथकवि मनमय भान,
भगवति करिय अभय वरदान ॥

उषाहरण नाटकक व्याख्या

[गीत सं०—१]

कुमति-विनाशिनी = अधलाह बुद्धिकेँ नष्ट कयनिहारि । अभिमत = अभिलषित । तनुरुचि..... = देहक कान्ति सँ कुन्द फूलक छविकेँ निन्दित कयनिहारि (श्वेतवर्णा) । आननरुचि = मुँहक छवि सँ चन्द्रमाक मण्डल उदास होइत अछि । धवल = उज्जर । शशि भाल = कपार पर चन्द्रमा । श्वेतवसन = उज्जर वस्त्र । लस = शोभित होइछ ॥

(गीतार्थे श्लोकः)

या शुक्लाम्बुरुहासना सुतपता पूर्णेन्दुबिम्बानना
कुन्देन्दूज्ज्वलविग्रहा निजकरैरक्षैर्बिभ्रती पुस्तकम् ।
वीणामक्षगुणं सुधाङ्कयकलसब्रह्मादिदेवार्चिता
सर्वाभीष्टफलप्रदा वितरतु श्रेयांसि सा शारदा ॥१॥

(नाम्नते)

सूत्रधारः—अलमतिविस्तरेण । आविष्टोऽस्मि खण्डबलाकुलरत्नाकरसुधाकरेण कविपण्डितकुलहृदयसरसीरुहभृङ्गायमाणेन सकलराजकुलमुकुटरत्नायमानचरणकमलेन मिथिलामहीमहेन्द्रेण महाराज श्रीमल्लक्ष्मीश्वरसिंहदेवदेवेन यथाऽस्मत्सभापण्डितेन कविपण्डितकुलतिलकायमानेन सकराढीकुलनन्दनेन श्रीहर्षनाथशर्मणा विरचितमभिनवमुदाहरणनाम नाटकमभिनीयतामिति । तद् एहि-

---

(गीतक अर्थ मे श्लोक)

जे उज्जर कमलक आसनवाली सुन्दर आँखिवाली, पूर्णचन्द्र सन मुँहवाली कुन्द ओ चन्द्रमा सन उज्जर चमकैत देहवाली, अपना हाथसभक द्वारा पुस्तक, वीणा, रुद्राक्षमाला ओ अमृत भरल घैल धारण करैत, ब्रह्मा आदि देवता सँ पूजित भय सकल अभीष्ट फल देनिहारि छवि सँ श्रीसरस्वती मङ्गल वितरण करथु ॥१॥

[नान्दीक अन्त मे]

सूत्रधार—विशेष कहब उचित नहि । आदेश पओने छी—खण्डबलाकुलरूपी समुद्रक चन्द्रमास्वरूप, कवि-पण्डितसभक हृदयरूपी कमलक हेतु भौंरास्वरूप, सभ राजालोकनिक मुकुटक रत्न सँ युक्त चरणकमलवला, मिथिलाक राजा महाराज श्रीमान् लक्ष्मीश्वर सिंहदेवदेव सँ जे हमर सभापण्डित, कवि ओ पण्डित मे श्रेष्ठ, सकराढी-वंश मे उत्पन्न श्री हर्षनाथ शर्माक बनाओल 'नवीन उदाहरण' नामक नाटक

भीमाहूय संगीतकमवतारयामि तावत् (सर्वतः परिक्रम्य नेपथ्याभिमुखमवलोक्य)—प्रिये ! इहागम्यताम् ।

(प्रविश्य)

नटी—एसहि आणवेदु अज्जउत्तो ।

[एषास्मि आज्ञापयतु आर्यपुत्रः ।]

सूत्र०—प्रिये ! पश्य सर्वतस्सुसमृद्धोऽयं वसन्तसमयः । तथाहि—

सम्फुल्लनवमल्लिकापरिमल श्रीसम्पदोल्लासिनो
माकन्दकोकिलकामिनीकलकलः कन्दर्पबाणानलः ।
भृङ्गालीकुलकाकली नववधूर्वीकटाक्षावली
निश्शङ्कम्भवि सर्वतः प्रसरति प्राप्ते वसन्तोत्सवे ॥२॥

तेनैनं वसन्तसमयमधिकृत्य सङ्गीतकमनुतिष्ठतु भवती ।

नटी—जहाणवेदि अज्जउत्तो [यथा आज्ञापयत्यार्यपुत्रः ।] (इति गायति) ।

भेलाउ' । तँ परवाली केँ बजाय संगीत प्रारम्भ करैत छी । (चारूभर घूमि नेपथ्य दिस देखि) प्रिये ! एम्हर आउ ।

(प्रवेश कय)

नटी—इयेह छी आज्ञा देल जाओ आर्यपुत्र ।

सूत्र०—प्रिये ! देखू, चारूभर ई वसन्त समय भरल पुरल अछि । जेना कि—

फुलाइत नवीन बेली फूलक सुगन्धि, मलयपर्वतक उल्लास, मत्त कोइलीक शब्द, कामबाणक आगि, भ्रमरी सभक गुञ्जन, नववधू सभक कटाक्षक पंक्ति—ई सभ वसन्त समय अयला पर पृथ्वी पर निश्चिन्त सर्वत्र पसरय लगैत ॥२॥

तेँ एहि वसन्त समयक विषय लय अहाँ संगीत गाउ ।

नटी—जे आज्ञा देथि आर्यपुत्र । (गीत छथि ।)

(राग वसन्त) [गीत सं०--२]

मदननरेश विजय मनकाज,
लय परिजन अनुगत ऋतु राज।
शोभित अलिपति मरकतमाल,
केशर मणिमय—छत्र विशाल।
मारुत-कम्पितमाधवि-पुंज,
नाचत रसमय मदन—निकुंज।
अलिकुलगुंजित गानविलास,
चम्पक किंशुक दीपकमास।
कोकिल कलरव नृपतिनिदेश,
चलत समीरन दण्ड उदेश।
निरखि सुरत विघटन अपराध,
करत कोप तेहु मानक बाध।
रसमय हर्षनाथकवि भान,
नृप लक्ष्मीश्वरसिंह रस जान॥

अपि च— [गीत सं०--३]

उसरल अगमरि शिशिर पसार,
बसल सरस ऋतुपति बनिजार।

[गीत सं०--२]

मदन नरेश=राजा कामदेव। अनुगत ऋतुराज=वसन्तक संग। अलिपति=भौंराक समूह। मरकत=मणि विशेष। मारुत-कम्पित=हवा सँ झुलाओल। अलिकुल=भौंराक समूह। किंशुक=पलाश। कलरव=स्वर। नृपति-निदेश=राजाक आज्ञा सँ (कोइलीक स्वररूपी)। समीरन=हवा। दण्ड उदेश=दण्ड देबाक हेतु (विरहिणीकेँ)॥

आओरो— [गीत सं०—३]

उसरल=हटल। पसार=देखबाक पसरल वस्तु। ऋतुपति

पसरल अगोरा मधुरस फूल,
अभिनव सौरभ, प्रेम अमूल।
लोलत दक्षिण पवन विचारि,
भमि भमि मांगत भ्रमर भिखारि।
पिककुल करत दलालक काज,
गाहक तरुणी तरुणसमाज।
हसित वचन लोचन दय वाम,
किनत सिनेह रतन सब ठाम।
रसमय हर्षनाथकवि भान,
नृप लक्ष्मीश्वरसिंह रस जान॥

सूत्र०— प्रिये साधु गीतम्।

(नेपथ्ये—इदो इदो पियसहीओ।) [इत इतः प्रियसख्यौ]

सूत्र०— (आकर्ण्य) कथमियं बाणपुत्री उषा कुम्भाण्डदुहिता रामया चित्रलेखयाऽप्सरसा च समं किमपि मन्त्रयन्ती इत एवाभिवर्त्तते। तदेहि, आवामप्यनन्तरकरणीयाय सज्जीभावाव। (इति निष्क्रान्तौ)।

[इति प्रस्तावना।]

बनिजार=वसन्तरूपी बनियाँ। दक्षिण-पवन=मलयानिल। पिककुल=कोइलीसभ। दलाल=सौदा पटओनिहार॥

सूत्र०—प्रिये! उत्तम गाओल।

[नेपथ्य मे—एम्हरहि बाटेँ पियसखी'।]

सूत्र०—(सुनि) की ई बाणासुरक पुत्री उषा, कुम्भाण्डक बेटी रामाक आ अप्सरा चित्रलेखाक संग किछु परामर्श करैत एम्हरहि अबैत छथि? तँ आउ, हमहूँ दुनू गोटए अग्रिम कार्यक हेतु तैयार होइ।

(दुहू बहार भेलाह।)

[इति प्रस्तावना]

[तखन दुहू सखीक संग उषा प्रवेश करैत छथि।]

(ततः प्रविशति सखीभ्यां सहिता उषा ।)

गीत सं०—४ राग कल्याण

तड़ित-विनिन्दक सुन्दर वेग,
गजगामिनि कामिनि परवेग ।
अलक कलित आनन अभिराम,
जनि घन-वलित विमल हिमधाम ।
अधर ललित, नासा अति धीरा,
कीर कीलक जनु बिम्बक लोरा ।
निरखि युगल कुच पङ्कज कांति,
चलति रोमावलि मधुकर पांति ।
अविरल नूपुर-किङ्किणि-राव,
मदनविजय जनु सामग गाव ।
रसमय हर्षनाथकवि गाव,
नृप लक्ष्मीधरसिंह जुगु भाव ॥

राग कान्हड़ा, गीत सं०—५

उपचित हृदय अनङ्ग, चलति रमणि सखिसङ्ग ।
मन्द मन्द परसार, जनि आलस कुचभार ।
अलस नयन चित चोर, जनि मद भरल चकोर ।

[गीत सं०—४]

तड़ित-विनिन्दक=बिजलीकी निन्दा करनेवाला स्वरूप । गजगामिनि=हाथी सनक गतिवाली ॥ अलकन्कलित=केश सों शोभित । आनन अभिराम=मुंह सुन्दर लगैछ । घनवलित=मेघ सों संयुत । हिमधाम=चन्द्रमा ॥ कीर=सुग्गा । बिम्ब=तिलकोड़क फड़ ॥ रोमावलि मधुकर=पेटक रोमरेखा रूपी भौंरा । अविरल=सघन । राव=शब्द । मदन-विजय=कामदेवक विजय । सामग=सामवेदक गायक ॥

[गीत सं०—५]

उपचित=बढ़ल । अनङ्ग=कामदेव । अलस-नयन=अलसायल

बोल वचन हसि मन्द, अमिय बरिस जनु चन्द ।
हर्षनाथ कवि भाव मिथिलापति रस आन ॥

रामा—सहि बाणपुत्रि ! उत्कण्ठितेव लक्ष्यते भवती, तत्किं कोऽपि पुरुषस्तव हृदये वर्तते ।

[सखि बाणपुत्रि ! उत्कण्ठितेव लक्ष्यते भवती, तत्किं कोऽपि पुरुषस्तव हृदये वर्तते ।]

उषा—(सप्रणयकोपम्) किमपि हिअए मदुअ जहा तहा जम्पसि । ता इदो दूरं ओसर (इति पुष्पमालया ताडयति) ।

[किमपि हृदये कृत्वा यथातथा जल्पसि । तदितो दूरमपसर ।]

चित्रलेखा—सहि बाणपुत्रि ! अप्पणो सहीअणे का लज्जा, ता कधेहि सच्चं ।

[सखि बाणपुत्रि ! आत्मनः सखीजने का लज्जा, तत्कथय सत्यम् ।]

उषा—(मलक्षमधोमुखी संस्कृतमाश्रित्य)—

गौरीशिखरालक्रीडा यदा दृष्टा मया सखि ! ।
ततः प्रभृति केनापि हेतुना व्याकुलमनः ॥१॥

रामा—कामेनेति भणितव्यम् ।

[कामेनेति भणितव्यम् ।]

अमिय=अमृत ॥

रामा—सखी बाणपुत्री ! कहीं उत्कण्ठित जकाँ लगैत छी, तें की कोनो पुरुष अहाँक हृदय मे छथि ?

उषा—(स्नेहयुक्त क्रोध कय) किछु मन मे राखि अण्ट सण्ट बजैत छह, तें एतय सों दूर भागह । (कुसुक मालासों मारैत छथि ।)

चित्र०—सखी बाणपुत्री ! अपन सखी सों कोन लाज ? तें सत्य कहु ।

उषा—(लाज करैत नीचां मुहें संस्कृतक आश्रय लय)—

गौरी ओ शिखर अलविहार जखन हम देखल, हे सखि ! तखन सों कोनो कारण हमर मन व्याकुल अछि ॥१॥

रामा—काम सों से कहु ।

उषा— (लज्जमधोमुखी तिष्ठति)।

चित्र०—सखि ! देइए गौरीए प्रसादेण सव्वं सुलहं होदि, ता तामेव पसादेदुं गच्छह्मा। (इति सर्वा देवीगृहमुद्दिश्य गमनन्नाटयन्ति।)

[सखि ! देव्या गौर्याः प्रसादेन सर्वं सुलभं भवति, तत्तामेव प्रसादयितुं गच्छामः।]

[सोहनी, गीत सं०—६]

सखि सब सङ्ग जय मन अनुमानी,
गिरजा पूजन चललि सेआनी।
अक्षत चानन सिन्दुर फूले,
बेलपत्र नव कय समतूले।
पुजलनि मन दय भगति बढ़ाए,
कयलनि विनती माथ नवाए।
मँगलनि वर पुनु दुहु कर जोरी,
आशा मोर परिपूरब गौरी।
हर्षनाथकवि भन मन लाए
सबखन भगवति रहथु सहाए॥

(ततः प्रविशति परितुष्टा गौरी)

उषा—(लाजें नीचामुहें रहैत छथि।)

चित्र०—सखी ! देवी गौरीक प्रसाद सँ सब सुलभ होइछ, तें हुनके प्रसन्न करबाक हेतु चलैत चलू।

[सभ केओ देवीक मन्दिरक हेतु जयबाक अभिनय करैत छथि।]

[गीत सं०—६]

सेआनी=चतुर नायिका। अनुमानी=विचारि। समतूले=जुटाय॥

[तखन सन्तुष्ट भेलि गौरी प्रवेश करैत छथि।]

सोहनी, गीत सं०—७

निज जन आरति हरण उदेश,
हिमगिरिनन्दनि देल परवेश।
जनिक चरण युग दरसन लागी,
हरि हर करथि कतेक तप जागी।
भगति विवस सेह दरसन देला,
बाणकुमरि अभिमत बुझि लेला।
कहलनि माधव शुक्लदल पाए,
हरि तिथि सपन मिलत पति आए।
ई कहि अन्तर्हित भय गेली,
बाणकुमरि सुनि हरषित भेली।
हर्षनाथ कवि भन मन लाए,
सबखन भगवति रहथु सहाए॥

(इति निष्क्रान्ता।)

रामा—सखि बाणपुत्रि ! सम्पन्नमनोरथा त्वं देव्याः प्रसादेन।

[सखि बाणपुत्रि ! सम्पन्नमनोरथा त्वं देव्याः प्रसादेन।]

उषा—(लज्जमधोमुखी तिष्ठति)।

[गीत सं०—७]

आरति=दुःख। हिमगिरिनन्दनि=पार्वती। हरि-हर=विष्णु ओ महादेव। भगति-विवस=भक्ति सँ विवश भय। माधव=वैशाख मासक। शुक्लदल=शुक्लपक्ष। हरि तिथि=एकादशी। अन्तर्हित=लुप्त॥

(गौरी बहार भय गेलीहि।)

रामा सखी बाणपुत्रि ! पूर्णमनोरथ भेलहुँ अहाँ देवीक कृपा सँ।

उषा—(लाजें नीचामुहें रहैत छथि।)

चित्र०—सहि बाणपुत्रि ! तुज्झ तावस्स घरे आणन्दद्धणी सुणीअदि, ता अह्मे वि तहिं गच्छह्मु ।

[सखि बाणपुत्रि ! तव तातस्य गृहे आनन्दध्वनिः श्रूयते, तद्वयमपि तत्र गच्छामः ।]

(इति निष्क्रान्तास्सर्व्वाः ।)

इति उषाकलाभो नाम प्रथमोऽङ्कः ॥

अथ द्वितीयोऽङ्कः

(ततः प्रविशति बाणासुरः)

(राग परज, गीत सं०—८)

बाणनृपति अब देल परवेस
कांपथि धरती कच्छप सेष ।
सहस बाहु, गिरि सदृस सरीर,
नयन निरखि केओ रहय न धीर ।
मांसपान कर लोचन लाल,
काल सदृस तनु, बदन कराल ।
सकल भुवन जल तृन सम जान,
भुजबल राख अधिक अभिमान ।

चित्र०—सखी बाणपुत्री ! अहाँक पिताक घर मे आनन्दक शब्द सुनि पड़ैछ, तेँ हमरहुलोकनि ओतहि जाइ ।

[सभ बहार भेलि]

इति उषाक वर लाभ नामक प्रथम अङ्क समाप्त ॥

द्वितीय अङ्क

[बाणासुर प्रवेश करैत छथि ।]

[गीत सं०—८]

गिरि सदृस=पहाड़क समान । तनु=देह । कराल=डराओन । तृण=

रसमय हर्षनाथकवि गाव,
श्रीलक्ष्मीश्वरसिंह सुजस भाव ॥

बाणः—कः कोऽत्र भोः !

(प्रविश्य)

दौवारिकः—जअदु जअदु देओ ।

[जयतु जयतु देवः ।]

बाणः—दौवारिक सत्वरं मन्त्रिराज कुम्भाण्डं प्रवेशय ।

दौवारिकः—यथाज्ञापयति देओ । (इति निष्क्रान्तः) ।

[यथाज्ञापयति देवः ।]

(राग परज, गीत सं०—९)

दूत वचन सुनि नृपति निदेस,
शङ्कित मन्त्रिराज परवेस ।
मन गुनि कत-विध करथि विचार
कोन परि सेवब नृप-दरबार ।
निरखि हमर अति सुन्दर रीति
किबहु होएत नृप मानस प्रीति ।
कोदह हमर जानि किछ दोष,
बाणनृपति मन उपजत रोष ।
अनुखन मन चिन्तित हो आज
परम कठिन नृप सेवन काज ।

सम=सड़क समान ॥

बाण के छथि एतय अछि ?

[प्रवेश कय]

दौवारिक—देवक जय हो, जय हो ।

बाण—दौवारिक ! झटदय मन्त्रिराज कुम्भाण्डके प्रवेश कराइह ।

दौवारिक—देवक जे आज्ञा । (बहार भय गेल ।)

[गीत सं०—९]

निदेस=आज्ञा सँ । शङ्कित=शङ्का सँ युक्त । कत-विध=कतेको प्रकारक ॥

हर्षनाथकवि भन दय नाव
नृप लक्ष्मीश्वरसिंह कुल भाव ॥

कुम्भाण्डः—जयति जयति महाराजः ।

बाणः—मन्त्रिराज, इहास्यताम् (इत्यालिङ्ग्योपवेशयति) ।

कुम्भाण्डः—(उपविश्य) देव, हर्षविशेषो लक्ष्यते, तत्किं हरप्रसादेन कोऽपि वरो लब्धः ?

बाणः—अथ किम् ।

कुम्भाण्डः—विशेषेण कथय ।

बाणः—कार्त्तिकेयध्वजभङ्गेन महद्युद्धमिति ।

कुम्भाण्डः—महाराज, कुसृष्टिपुष्टोऽसि, न भद्रं कृतं, नूनमनेन वरेणासुरकुलं क्षयं यास्यति ।

बाणः—(सरोषम्) आः पाप कुम्भाण्ड ! ब्रह्माण्डस्फोटनं वाचा करोषि । नाहं कस्मादपि बिभेमि । शृणु रे संग्रामकातर !

कुम्भाण्ड—महाराज विजयी होथु ।

बाण—मन्त्रिराज ! एतय बैसू । (आलिङ्गन कय बैसबैत छथि ।)

कुम्भा०—(बैसि) देव ! विशेष आनन्द बुझाइछ की महादेवक प्रसाद सँ कोनो वर पाओल अछि ?

बाण—त आओर की ?

कुम्भा०—विशेष रूपें कहू ।

बाण—कार्तिकेयक हेतु ध्वजाक भंगला सँ महान् युद्ध होयत ।

कुम्भा०—महाराज ! अधलाह कार्य मे पड़ि गेल छी, नीक नहि कयल । निश्चित एहि वरदान सँ असुरकुलक क्षय होयत ।

बाण—(तमसाय) आः पाप कुम्भाण्ड ! वचन सँ हमर ब्रह्माण्ड फोड़ि रहल छह । हम ककरहु सँ नहि डराइत छी । सुन रे पद्म सँ डरयनिहार ! —

इन्द्रादयो मम न सास्त्रबाहुसङ्घोपमा पराः ।
परे के सन्ति भुवने ये योत्स्यन्ति मया सह ॥४॥

कुम्भाण्डः—यथा वदति देवः ।

(ततः प्रपतति मयूरध्वजः ।)

बाणः—(दृष्ट्वा सहर्षं) पश्य पश्य मन्त्रिराज ! पतितो मयूरध्वजः । तन्नूनमचिरेण मम बाहुसहस्रधारणं सफलतामेष्यति । तदेहि, गौरीशङ्कराभ्यां पुष्पाञ्जलिदानाय ।

(इति निष्क्रान्तौ)

(इति विष्कम्भकः ।)

(ततः प्रविशति रामाचित्रलेखाभ्यां सहिता पुरुषसङ्गचिह्नलता उषा)

उषा—(सर्वेलक्ष्यम्)—(राग कलिङ्गड़ा, गीत सं०—१०)

सपन देखल एक नागर धीर,
तहिं धोर अपित कयल करीर ।

हमरा डरें इन्द्र आदि देवता अपन देह नुकावय लगैत छथि आ आन के एहि भुवन मे अछि जे हमरा संग युद्ध करत ? ॥४॥

कुम्भा०—जे कहैत छी तेब सएह ठीक ।

[तखन मयूरध्वज खसैत अछि ।]

बाण—(देखि सहर्ष) देख, देख, मन्त्रिराज ! खसल मयूरध्वज । तें आब निश्चय हमर हजार बाँहि धारण करब सफल होयत । हाँ आउ, गौरी-शंकर कें पुष्पाञ्जलि देबाक हेतु ।

[दुहु बहार चलाह ।]

[इति विष्कम्भक]

[तखन रामा जी चित्रलेखाक संग पुरुष-सम्पर्कक चिह्न सँ युक्त उषा प्रवेश करैत छथि ।]

उषा—(विकलता सँ)—

[गीतसं०—१०]

नागर धीर = चतुर नायक गम्भीर । अपित = अर्पित । चिकुर = केश ।

फूजल चिकुर फुजल मोर चीर,
अभरण एक रहल नहिं धीर ।
आनन मलिन घाम भरि गेल,
कोन पुरुष मोहि सङ्गम देल ।
भल छल मरण होइत वर काज,
के की कहत तकर हो लाज ।
रसमय हर्षनाथकवि भान,
नृप लक्ष्मीश्वरसिंह रस जान ॥

(इति शिरसि हस्तविन्यास कलङ्कबाधाञ्चाटयति ॥

रामा—(सविस्मयम्) सखि ! समस्ससिहि समस्ससिहि । न खलु कोवि तुम्ह दोसो हुविस्सदि । सुमिरेहि, सुमिरेहि देइए गोरिए वयणं । (इति सर्वं स्मारयति ।)

[सखि ! समाश्वसिहि समाश्वसिहि । न खलु तव कोपि दोषो भविष्यति । स्मर स्मर देव्या गौर्या वचनम् ।]

उषा—(सानन्दलज्जं स्मरणमभिनयति)।

रामा—सखि ! लद्धमणोरहा तुहं । ता कधेहि विसेसेण सविणवुत्तं ।

[सखि ! लब्धमनोरथा त्वं, तत्कथय विशेषेण स्वप्नवृत्तम् ।]

उषा—(सलज्जं गीतेन कथयति)—

चीर = वस्त्र । अभरण = गहना ॥

(माथ पर हाथ दय कलङ्क लगबाक बाधाक अभिनय करैत छथि ।)

रामा—(आश्वस्त करैत) सखी ! धैर्य धरु । अहाँक कोनो दोष नहि होयत । मोन पाड़ू देवी गौरीक वचन । (सभटा स्मरण करैत छथि ।)

उषा—(आनन्द ओ लाज सहित मोन पाड़बाक अभिनय करैत छथि ।)

रामा—सखी ! अहाँ मनोरथ कें तँ पाओल । आब कहू विशेषरूपें स्वप्नक वृत्तान्त ।

उषा—(लज्जा सहित गीतक द्वारा कहैत छथि:—)

सोहनी, गीत सं०—११

सखि हे, यतन दय सुनु मोर बानी,
करिय उपाय हृदय अनुमानी ।
सपन समय एक सुन्दर रूपे,
देखल नागर मदन सरूपे ।
तसु मुख लखल तनु पुलकित भेला,
तम्हि पुनि हसि मोहि कर लेला ।
रसमय वचन बोलथि पुनु धीरे,
कोन परि रहओ तखन चित थीरे ॥
तखनुक अवसर कि कहब तोही,
कहइत लाज निवारय मोही ।
रसमय हर्षनाथकवि भाने,
नृपलक्ष्मीश्वरसिंह रस जाने ॥

अपि च— (राग मालव, गीत सं०—१२)

सुनु सखि ओ रे, सरस देखल जनि सुपुरुष,
तसु मुख, सुपरि सुमति होक कत दुख ।
तनि बिनु ओ रे, जत अछि एहि जगती तल,
शीतल, से सभ दुख दय बीतल ।
जग भरि ओ रे, घर घर हँसल सकल जन,
मोर मन, तम्हि बिनु थिर नहि कतखन ।
तम्हि पहु ओ रे, होएत समागम कोनपरि,
हरिहरि, करिय उपाय यतन भरि ।

[गीत सं० —११]

यतन = यत्न । नागर = चतुर नायक । मदन-सरूपे = कामदेवक स्वरूपमे । कर लेला = हाथ धयलनि । निवारय = रोकैछ ॥

आओर, [गीत सं०—१२]

जगतीतल = संसार मे । हरि हरि = हाय हाय । यतन भरि = सब

छनछन ओ रे, मदन-दहन दह भोर तनु,
सखि सुनु, भाव न किउब हम तह्नि बिनु।
रसबुझु ओ रे, लछमीश्वरसिंह गुणमय,
मनदय, हर्षनाथ भन रसमय ॥

(इति विरहवेदनामभिनयति ।)

रामा—सहि ! समस्ससिहि समस्ससिहि[1] ।

[सखि ! समाश्वसिहि, समाश्वसिहि ।]

(चित्रलेखाम्प्रति) सहि चित्तलेहे ! को उवाओ हुअिस्सदि ।

[सखि चित्रलेखे ! क उपायो भविष्यति ।]

चित्र० - कीरिसो अविज्जादजणसंगमोवाओ ।

[कीदृशोऽविज्ञातजनसङ्गमोपायः ।]

उषा - एवं चिअ मज्जीअणं पि दुल्लहं हुअिस्सदि (इति मूर्च्छति)।

[एवञ्चैवमज्जीवनमपि दुर्लभं भविष्यति ।]

रामा - समस्ससिहि समस्ससिहि [समाश्वसिहि समाश्वसिहि ।]
(इत्युत्थाप्य नलिनीदलेन वीजयति) ।

चित्र० - (जलं सिञ्चति)।

भरि । मदन-दहन = कामदेवरूपी अग्नि । दह = जरबैछ । तनु = देह ॥

(विरह-वेदनाक अभिनय करैत छथि ।)

रामा—सखि ! धैर्य धरू, धैर्य धरू । (चित्रलेखाक प्रति) सखी चित्रलेखा ! कोन उपाय होयत ?

चित्र०—अज्ञात व्यक्तिक संगमक उपाय केहन होयत ?

उषा—जँ एना होत हमर जीवनो दुर्लभ होयत । (मूर्च्छित होइत छथि ।)

रामा—धैर्य धरू, धैर्य धरू । (उठायकें पुरइनिक पात सँ हौंकैत छथि ।)

चित्र०—(जल छिटैत छथि ।)

उषा - (संज्ञां लब्ध्वा सर्वैरलक्ष्यम् ।) --

राग मालव, गीत सं० – १३

पहु बिनु किछु नहि भावय रे, कि करब परकारे ।
कोन परि होएत समागम रे, सखि करह विचारे ॥
मलय पवन नलिनी-दल रे, चानन घनसारे ।
परसि अधिक तनु तापय रे, जनि सिंधुम अँगारे ॥
सुमरि सुमरि तसु आनन रे, पीयुष सम बानी ।
अनुछन रहत विकल मन रे, सखि सुनह सेआनी ॥
अओ नहि होयत समागम रे, कि कहब सखि आने ।
आनि गरल घोरि पीउब रे, हम तेजब पराने ॥
हर्षनाथ कविशेखर रे, रसमय इहो गाने ।
लछमीश्वरसिंह गुणमय रे, मन दय बुझु भावे ॥

(ततश्चन्द्रकरस्पर्शेन दुःखमनुभूय मूर्च्छति । सख्यौ वीजयतः ।
पुनः संज्ञां लब्ध्वा गीतेन कथयति)--

सोहनी, गीत सं०—१४

सखि सखि ! करह एकर उपचारे ।
रहत विकल मन, दहत सतत तन, चान किरण दुरवारे ॥

उषा—(होश पाबि विकलता सहित)—

[गीत सं०—१३]

भावय = सोहाइछ । परकारे = उपाय । मलय-पवन = मलय पर्वतक वसात । नलिनी-दल = पुरइनिक पात । घनसार = कपूर । परसि = छुबि । तनु तापय = देहकें तप्त करैछ । सिंधुम = बिनु धूआँक । पीयूषसम = अमृतक समान । गरल = बिष ॥

[तखन चन्द्रमाक किरणक स्पर्श सँ दुःख पाबि मूर्च्छित होइत छथि । दुइ सखी पंखा हौंकैत छथि । फेर होश पाबि गीतक द्वारा कहैत छथि -]

[गीत सं०—१४]

[—दहन = जरबैछ । सतत = हरदम । तन = देह । दुरवारे = असह्य-

कुमुदबन्धु सिंधुतनुभव कुन्द कुसुम सम धामे ।
एहन चाम तन, दहत सतत मन, असित हृदय परिनामे ॥३॥

(एतदर्थे श्लोकः)

क्षीराब्धिजातः कुमुदस्य बन्धुः कुन्दप्रसूनप्रतिमाकुरेखः ।
तथापि चन्द्रस्तनुदाहकारी स एष हृच्छ्यामलतास्वभावः ॥५॥

वडवानल अर्क उदर गेह धरु, किए अब्धिनिधि नहि चाले ।
कालकूट सम आनि मदनहर, किय न कयल तसु पाले ॥२॥

(अत्रार्थे श्लोकः)

क्षीर्वाग्निवातो राशिनं जुगोप यस्तस्विरेन विषमन्मुमोच ।
क्रूरस्तथाप्येनमुदीक्ष्य शम्भुः पपौ दयालुर्विषमस्य कस्मात् ॥६॥

राहुदसन विष जाय जिवए पुनि, शशि विरहिन जिवघाती ।
तसु डर यमहु डेराथि जगत महु, ये जन अति उतपाती ॥३॥

---

३ । कुमुदबन्धु - कुमुद पल्लक मित्र । सिंधु तनुभव - क्षीरसमुद्रक देह सँ उत्पन्न । कुन्द कुसुमसमधाम = कुन्द पल्लक समान छविधरा । असित-हृदय - कारी हृदय (चन्द्रमाक सुत कुमा हृदय मे कलङ्कक परिणाम पिक) ।

(एहि अर्थ मे श्लोक)—

ई चन्द्रमा क्षीरसागर सँ उत्पन्न, कुमुदक बन्धु औ कुन्द फूलक छविक समान किरणवला छथि तथापि देह मे ताप उत्पन्न करैत छथि से ई हिनक हृदयक कालुष्यक (कारी रहनाइक) स्वभाव थिक ॥ ॥५॥

II—वडवानल = समुद्रक आगि । कालकूट = विष । मदनहर = महादेव । तसु = हुनक (चन्द्रमाक) ॥

(एहि अर्थमे श्लोक)—

जे समुद्र एहि चन्द्रमाक वडवानल अर्क तुकाय नहि सेलनि, अपितु विष अर्क छाप देलनि से हिनका क्रूर देखि दयालु महादेव विष अर्क पीबि किछेक नहि सेलाह ॥६॥

(एतस्मिन्नर्थे श्लोकः)

स्वर्भानुदष्टोऽपि जहाति नासुं विप्रियोगिनां प्राणहरः सुधांशुः ।
विचर्क्यमाणः स्फुटमत्र येन यमोऽपि दुष्टाग्निलराशिमेति ॥७॥

घेरल भय रहु अचिर मिलत पहु, होएत सुशीतल चाले ।
नृप लक्ष्मीश्वरसिंह बुझथि रस, हर्षनाथ कवि भाने ॥४॥

(इति मूर्च्छति ।)

रामा—(छायाक नाड़ीकेँ देखि संस्कृतमाश्रित्य)

कदाचिद्वहते नाडी कदापि स्थिरतां गता ।
एतल्लिङ्गेनानया जायते चरमा दशा ॥८॥

हा हतास्मि, क छायाया भविष्यति । [हा हतास्मि, क छायायो भविष्यति ।] (चिन्तयित्वा) सखि चिन्तयेहे ! पश्य पश्य सखी अवस्थाम् ।]

III—राहुदसन-विष - राहुदसन दाँतक बीच मे । शशि = चन्द्रमा । जिवघाती = प्राणनाशक । यमहु = यमराजो ॥

(एहि अर्थ मे श्लोक)—

राहुक ग्रसित चन्द्रमा पर ई मनुष्य प्राण नहि त्यागैत छथि अपितु वियोगीक प्राण हरैत छथि नहि ? [illegible] तर्क करैत छी जे यमराजो दुष्टसभ ! अत्यन्त डराइत छथि ॥७॥

IV – अचिर = शीघ्र । सुशीतल = अतिठण्डा ॥

(मूर्च्छित होइत छथि ।)

रामा—(छायाक नाड़ी देखि संस्कृतक आश्रय कय) –

नाड़ी [illegible] कदापि स्थिर भय जाइछ [illegible] देखला सँ हिनक अन्तिम दशा बुझाइछ ॥८॥

हाय ! [illegible] ? (चिन्तयित्वा [illegible] चिन्तलेह । देखु, देखु सखीक अवस्था !

मोहनी, गीत सं०—१५

कि कहब हे सखि ! धनिक विशेष,
आज न जिउति अतिविरह कलेष ।
परस दगध सेज कि कहब तोहि,
तें तसु जीव न निश्चय मोहि ।
तसु तनुवेदन देखल न जाय,
वसन भूषण तें भूमि लोटाय ।
नाहिक भेद कुशय अनुकूल,
कर कङ्कण भेल बाहुक मूल ।
कीदृश जिवइत अछि सुकुमारि,
बुझय चिकुर उर परसि विचारि ।
रसमय हर्षनाथकवि भाने,
नृप लक्ष्मीश्वरसिंह रस जाने ॥
(इत्युक्ते विलपतः ।)

चित्र०—हा हतास्मि ! कथं कथं सहीए पियअमं आणिस्स ।
[हा हतास्मि ! कथं पुनः सख्याः प्रियजनं ज्ञास्यामि ।]
रामा० (सस्कृतमाश्रित्य)

[गीत सं०—१५]

धनिक विशेष = धन्य एहि सखीक हालसि । परस दगध सेज = हिनक ओछानक स्पर्श सं देह जरैछ । तनुवेदन = देहक वेदना । वसन = वस्त्र । चिकुर उर परसि = केश छातीक स्पर्श कय ॥

(दूनू विलाप करैत छथि ।)

चित्र०— हाय मुइलहुँ ! कोना कय सखीक प्रिय व्यक्ति कें जानब ?
रामा० (सस्कृतक अवलम्बन कय)—

मुहुर्भ्रान्तिर्मुहुर्मूर्च्छा मुहुस्तन्वा मुहुर्ज्वलिः ।
सखीहृदयबाधा हि हन्तास्मास्वपि दृश्यते ॥१॥
(चित्रलेखाप्रति गीतेन)

मोहनी, गीत सं०—१६

हे सखि हे सखि ! करहु उपाय,
विरह वेदन सखि ! सहलो न जाय ।
सयन पुरुषरूप मन अवधारी,
सब पट त्रिभुवन लिखहु विचारी ।
सब तरु चीन्हहु तोहें नारी,
अपन सखी कहु लागु गोहारी ।
सखि मोर तसु रूप मन अवधारी,
पट देखि निज प्रिय चिन्हति विचारी ।
रसमय हर्षनाथ कवि भाने,
नृप लक्ष्मीश्वरसिंह रस जाने ॥

चित्र०— (सोत्प्रासं कम्पं) सखि ! रमणिज्जं वत्थं मन्तिदं [सखि ! रमणीयं खलु मन्त्रितम् ।] (इति तथा करोति) ।

बारम्बार भ्रम, बारम्बार मूर्च्छा, बारम्बार होश ओ बारम्बार धैर्य—ई सभ जे सखीक हृदय मे बाधा उपस्थित अछि से हाय! हमरहु सभ मे देखल जाइछ ॥१॥

(चित्रलेखाक प्रति गीतक द्वारा)—

गीत सं०—१६

सयन = शयनकक्ष मे । पुरुषरूप मन अवधारी = मन मे सुन्दर पुरुष सभक रूपक ध्यान कय । पट = चित्रपट = चित्र लिखबाक कपड़ा । त्रिभुवन = तीनहुँ लोक मे स्थित युवककें । सबतरु = सभठाम । सब = सभ कें । गोहारी = रक्षाक उपाय । तसु रूप = मनिक (मनमे स्थित पुरुषक) रूपकें । अवधारी = विचारि ॥

चित्र०—(मोघं हिलवेन) सखी ! बड़ दीव विचार कयलह अछि । (तहिना करैत छथि ।)

'अशोटी, गीत सं०—१७

लेख कर गहि ललित लिखनी सकल सग बनाए ओ ।
लिखथि मन दय चित्रलेखा विविध पट्ट बनाए ओ ॥
देव दानव सिद्ध चारण यक्ष राक्षस किन्नरा ।
लिखल रघुकुल सकल यदुकुल अनेक अछि जन नरवरा ॥
लेख कर गहि बाणतनया देखल पट मनलाए ओ ।
निरखि अनिरुध रूप मन गुनि अँगुरि देल देखाए ओ ॥
कमल सखिसँ अधिक विनती करह लहु उपाए ओ ।
हर्षनाथ विचारि मन गिरिजा चरण हिय लाए ओ ॥

चित्र०—(सशोक) एसो कल समुद्दमज्झणिम्मिअदोआरवदीणअरमज्झे वसइ, ता कठिणो अत्थ सग्गमोआओ । [एवं खलु समुद्रमध्यनिर्मितद्वारवतीनगरमध्ये वसति, तत्कठिनोऽस्य सङ्गमोपायः ।

उषा—(सोत्कण्ठम्)

(राग योगिया, गीत सं०—१८)

आइ द्वारिका आजे, देखि लाजे, मन दय कह मोर काजे ॥
योगबल तोहें सब ठामे, निज कामे, करह गमन अनुपामे ॥

[गीत सं०—१७]

लेख = लिखन अछि । कर गहि = हाथ सँ पकड़ि । ललित लिखनी = सुन्दर कलम (तूलिका) । नरवरा = उत्तम मनुष्य । अनिरुध = अनिरुद्ध (श्रीकृष्णक पौत्र) ॥

चित्र०—(शोक सहित) ई तँ समुद्रक बीच मे बनाओल द्वारकानगर मे बसैत छथि । तेँ हिनक समागम कठिन अछि ।

उषा—(उत्कण्ठा सहित)—

[गीत सं० १८]

योगबल = योगसिद्धिक बलेँ । अनुपामे = अपूर्व । बेआजि = लाथ ।

१० संशोटी ।

यौ तोहें करह बेआजे, मोर काजे, हम न जिअब सखि ! आजे ॥
दक्षिणपवन प्रेम बामे, परिनामे, हनब मदन मोहि ठामे ॥
हर्षनाथकवि भाने, परमाने, मिथिलापति रस जाने ॥
(इति चित्रलेखाचरणयो विपतति)

चित्र०—(आलिङ्ग्य सोपदेशं सकरुणम्)—

(दोहा)

आए द्वारका आज हम कामतनय यदुवीर ।
आनि मिलाएब ताहि संग, करह सुचेतसि ! धीर ॥
(इति सत्वरगमनमभिनयति) ।

उषा (निरूप्य) कथं गदा उजेव पिअसही चित्तलेहा ? [कथं गतैव प्रियसखी चित्रलेखा ?[(रामाभ्यर्थि संस्कृतमाश्रित्य)—

बहुविनयविताने प्रेरिता चित्रलेखा
कुसुमसुकुमारदेहा कामिनी दूरदेशम् ।
अविदितबहुभारा द्वारकां सा प्रतस्थे
परहितकरणच्छलं स्मरत्यागतव धाम ॥१०॥

दक्षिण पवन = दक्षिणाही हवा (मन्दानिल) । बामे = विपरीत । परिनामे = अन्तिम अवस्था । हनब मदन = कामदेव मारैत छथि ॥
(चित्रलेखाक पयर पर खसैत छथि ।)

चित्र०—(आलिङ्गन कए बैसाय करुणापूर्वक)—

(दोहा)—

कामतनय = कामदेवक पुत्र अनिरुद्ध कें । यदुवीर = यदुवंश मे परा-क्रमी ॥ (शीघ्र जमवाक अभिनय करैत छथि ।)

उषा (देखि) की चल गेलोहि प्रियसखी चित्रलेखा ? (रामाक प्रति संस्कृतक आश्रय लय)—

बहुत विनतीक विस्तार सँ प्रेरित भय फूलसनक कोमल देहवाली सुन्दरी चित्रलेखा बहुत भार उठयबा सँ अपरिचितो होइत दूरदेश द्वारकाक हेतु प्रस्थान कयलनि । ओ दोसराक हित करबाक इच्छुक भय प्राण-संकटोक चिन्ता नहि करैत छथि ॥१०॥

रामा • सहि ! सच्चं । [सखि ! सत्यम् ।]

उषा • ता अहं वि जहा तहा समअ-णअणत्थं पुप्फवाडिअं गच्छह ।

[तदावामपि यथा तथा समयनयनार्थं पुष्पवाटिकां गच्छावः ।]

[इति निष्क्रान्ते]

इति चित्रलेखाप्रस्थापनो नाम द्वितीयोऽङ्कः ।।

अथ तृतीयोऽङ्कः

(ततः प्रविशति पथि अभिनयन्ती चित्रलेखा)

चित्र० – एस समुद्दो, इअं सा दोआरिआ, इअं क्खु अणिरुद्धस्स घरं, ता एत्थ पविसामि [एष समुद्रः, इयं सा द्वारिका, इदं खलु अनिरुद्धस्य गृहं तत्र प्रविशामि ।] (इति प्रवेशमभिनयति ।)

(ततः प्रविशति चिन्ताकुलोऽनिरुद्धः ।)

अनि० – (सवैक्लव्यम्)

रामा—सखी ! सत्य ।

उषा—तो अपनोलोकनि जेना-तेना समय बितयबाक लेल फुलवाड़ी चली ।

(बाहर भय गेलि ।)

।। इति चित्रलेखाक विदा करब नामक दोसर अंक समाप्त ।।

तृतीय अङ्क

[तखन बाद मे परिश्रमक अभिनय करैत चित्रलेखा प्रवेश करैत छथि ।]

चित्र०—ई समुद्र थिक, ई ओ द्वारिका थिक । ई अनिरुद्धक घर थिक । तैं एतय प्रवेश करैत छी । (प्रवेश करबाक अभिनय करैत छथि ।)

[तखन चिन्ता सँ व्याकुल अनिरुद्ध प्रवेश करैत छथि ।]

अनिरुद्ध –(विकलतापूर्वक) हाथीक समान कोमल गतिवाली, तथा कोमल मे

मालङ्गेन समानकोमलगति कोपे तथा कोमला
मृद्वङ्गी मृदुभाषिणी मृदुतया हास्येऽपि या कोमला ।
स्वप्ने मां समुपागता विधिवशात्सम्प्रत्यिमना कोमला
जाता सा कठिना कथं मम पुनर्हृत्तोष वित्तङ्कृता ।।१।।
अपि च—

सोहनी, गीत सं०—१९

हरि हरि देखल अपरुप रामा ।
देखइत नयन सुफल कय मानल, पूरल लोचनकामा ।।
तहिँ चपल रुचि कठिन कनकमय-वल्ली करि अवधाने ।
निजकौशल परगासन कञ्जज, तसु मनु कए निरमाने ।।
गमन-धनुष हर-नयन-दहन सहुँ, श्यामल केशर सेये ।
लखि चतुरानन भाग जुगल करि, कए तसु भौंह विशेषे ।।
मृग अञ्जन खञ्जन मदगञ्जन, लोचन सम निज काँती ।
मानल पङ्कज सै जनि कञ्जज, निज पद देल तसु छाती ।।

कामक कोमल अङ्गवाली, कोमल वचनवाली कोमल अवस्थावाली, हँसियो मे कोमल, तथा सब तरहेँ से कोमल भए भाग्य सँ हमर स्वप्न मे हमरा लग प्रकटीहि से कठोर कोना भय गेलीहि आ हमर चित्तके चोरायके चल गेलीहि ।।१।।

आओर, [गीत सं०—१९]

अपरुप रामा = अपूर्व सुन्दरी । लोचन-कामा = आँखिक मनोरथ ।। [illegible] = [illegible] कान्ति सँ युक्त । कनकमय वल्ली = सोनाक लती । अवधाने = निश्चय । परगासन = प्रकाशित करबाक लेल । [illegible] = [illegible] धनुष । [illegible] = महादेवक [illegible] । श्यामल केशर [illegible] = [illegible] (सूत) [illegible] । [illegible] = [illegible] । भाग [illegible] भाग (जरण कारी धनुषक) ।। मृग [illegible] तसु छाती = हरिण आँखिक ओ खञ्जनक

[illegible] रजनीकर, अन्तर श्यामल बानी ।
कनककुम्भ कुच युगल दम्भ लखि, विदलित दाडिम छाती ॥
दाडिम बीज दशन बन्धूकमय वसनवसन निरमाने ।
नव लक्ष्मीश्वरसिंह नृपति रस, हर्षनाथ कवि भाने ॥

अपि च

राग देश, ताल सं० -- २०

रे मोर प्राण पियारी, सुकुमारी ।
[illegible] बरनारी ॥
[illegible] मारि [illegible] ।
[illegible] ।
[illegible] बाने, [illegible] आने ।
[illegible] मोर [illegible] पराने ॥
[illegible] सनमारे ।
[illegible] बाजु अन्हारे ॥
[illegible] भाने [illegible] ।
[illegible] रस जाने ॥
([illegible] ।)

[illegible] । ([illegible]) [illegible] । कमल = स्वच्छ । रजनीकर = चन्द्रमा । अन्तर = हृदय में । कनककुम्भ = सोनाक चैल सनक । कुचयुगल दम्भ = कुच सनक [illegible] । विदलित = फाटि गेल । दशन = दाँत । बन्धूकमय = मधुरीक फलक स्वरूप । दशन वसन = ठोर ।

आओर, [गीत सं०—२०]

बरनारी = श्रेष्ठ रमणी । बिह = भाग्य, विधाता । सनमारे = संसार में । परकारे = उपाय ॥

(चित्राक अभिनय करैत छथि ।)

चित्र० — [illegible] किमपि चिन्तयन् तिष्ठति, तथावस्थ हृदयमपि [illegible]] (इत्यपायार्थं तिष्ठति ।)

अनि० — (पुनः [illegible] इत्यादि पठति ।)

चित्र० — (निपुणं निरूप्य) [illegible] एतेन अस्य [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]] ([illegible]) ।

अनि० — (पृष्ट्वा सहर्षं) कथमयं चित्रलेखा ? चित्रलेखे एषोऽभिरूपः प्रणमति ।

चित्र० — [illegible] । [[illegible]]

[illegible] । ([illegible] ! [illegible] ।

चित्र० — (मौनेन कथयति ।)--

चित्र० — [illegible] ? [illegible] छथि ? [illegible] हिनक हृदयक भाव बुझल छी । (अहु मग [illegible] छथि ।)

[illegible]

अ० — (नीरजनी देखि) निश्चय हिनक एहि वचनक उद्गार सँ तर्क कथल आइल जे इहो अपन हृदय प्रियतमोके स्वप्न मे देखलनि [illegible] । ([illegible] ।)

अनि० — (देखि सहर्ष) की ई चित्रलेखा थिकीहि ? चित्रलेखा ! ई अभिरूप [illegible] प्रणाम करैत छथि ।

चित्र० — प्रणमनीय होउ ।

अनि० — (स्वगत) अस्मत् अनुकूल (कृपाप्राप्त) छी । (प्रकाश) चित्रलेखा । सब ऐश्वर्य सँ युक्त सिद्धयोगिनी अहाँक एहिठाम अनजान की प्रयोजन ?

चित्र० — (गीतक द्वारा कहैत छथि)--

राग सुहराच, गीत सं०—२१

सखि मोर बाणकुमारी, तुअ गुण लुबुधलि से वरनारी ॥
गमन मोय तोहि देखो, मिलन मनोरथ करए विशेषी ॥
तुअ बिनु धरय न धीरे, केश न चिकुर वेनय नहि चीरे ॥
अनुखन जप तुअ नामे, मन मय तनिक पुरिअ मनकामे ॥
हर्षनाथकवि भाने, नृप लक्ष्मीश्वरसिंह रस जाने ॥

अपि च—

राग केदार, गीत सं०—२२

कि कहब तनिक विशेष, माधव ! कहितहु होअ कलेश ॥
आनन करतल राखि, माधव ! दिवस गमावथि आखि ॥
मदनदहन वह देह, माधव ! आगु विपिन सम गेह ॥
निरखि सरसशशि काय, माधव ! मलयपवन तनु ताय ॥
तुअ सङ्गम अभिलाष माधव ! छनभरि जीवन राख ॥
अचिर चलिअ तसु धाम माधव ! पुरिअ तनिक मनकाम ॥
हर्षनाथकवि भान, माधव ! मिथिलापति रस जान ॥

अभि० चित्रलेखे ! भवत्या प्रियसखी मयापि रक्षणे सङ्कल्पिता । तदवधि निरय कन्दर्पो मां विशिनष्टि । तस्मादनुग्रहाय मां शोणितपुरगमनेन।

[गीत सं०—२१]

लुबुधलि = लोभावलि । वरनारी = उत्तम रमणी । धीरे = धैर्य । केश न चिकुर = केश कें नहि सम्हारि पमेश । चीरे = वस्त्र ॥

आधार, [गीत सं०—२२]

विशेष = अधिक दुर्दशा । कलेश = दुःख । आनन करतल = मुंहकें हाथ पर । आखि = पलखाय । मदन-दहन देह = कामदेवरूपी आगि जरबैत अछि । विपिन सम गेह = वन सम घर । सरस-शशि = सरस चान्दमाकें ॥

अभि० • चित्रलेखा ! अहंक प्रियसखीक हमहूँ स्वरूपमे साक्षात्कार कयल । तखन सं निर्दय कामदेव हमरा बाणसं कटैत छथि । तें हमरा

(इति चित्रलेखापादयो निपतति)।

चित्र०—(आलिङ्ग्य गोपयेत्य) कथं अनुग्रहेऽप्यभ्यर्थना ? एवं भवतु । [कथमनुग्रहेऽप्यभ्यर्थना ? एवं भवतु ।] (इत्यनिरुद्धेन सार्द्धं गमनमभिनयति) ।

चित्र०—पेक्ख माधवजन्दण ! शोणिअपुरं पत्तं । इदं खलु पिअसहीए णिज्जणं शअणघरं ता एत्थ तुम चिट्ठ । अहं पिअसही आणेमि । [प्रेक्षस्व माधवनन्दन ! शोणितपुरं प्राप्तम् । इदं खलु प्रियसख्या निर्जनं शयनगृहं तदत्र त्वं तिष्ठ । अहं प्रियसखीमानयामि । (इति निष्क्रान्ता) ।

अभि०

सोरठा, गीत सं०—२३

कङ्कन आवति धनि पासे, पुरत हृदय अभिलासे ॥
नूपुर अवद सुनि काने, कङ्कन होयत परमाने ॥
कङ्कन देखब भरि आँखी रहय न धैरज राखी ॥
एखनुक एक छन मोही, कोटि कलप सम होही ॥
हर्षनाथ कवि भाने, आरत नहि परमाने ॥

(इत्युत्कण्ठाभिनयति) ।

शोणितपुर लय जयबाक कृपा करू । (चित्रलेखाक पाएर पर खसैत छथि) ।

चित्र० • (आलिङ्गन कय बैसाय) की अनुग्रहो मे प्रार्थना होइछ ? एहने होयत। (अनिरुद्धक संग जयबाक अभिनय करैत छथि ।)

चित्र० • देखु, माधव-नन्दन ! शोणितपुर आबि गेलहुँ । ई थिक प्रियसखीक एकान्त सूतबाक घर । तें एतय अहाँ रहू । हम प्रियसखीकें अनैत छी । (बहार भेलि ।)

अभि० •

[गीत सं० - २३]

परमाने = विश्वास । काहि कलप सम = कठोरो कल्पक समान ॥

(उत्कण्ठाक अभिनय करैत छथि ।)

(ततः प्रविशति चित्रलेखा)

चित्र० — इअं पुप्फवाडिआ, एत्थ पिअसही हुविस्सदि, ता एत्थ पविशामि । [इयं पुष्पवाटिका, अत्र प्रियसखी भविष्यति तदत्र प्रविशामि ।] (इति प्रवेशमभिनयति) ।

(ततः प्रविशति उषा रामा च ।)

उषा — कधं अज्जावि ण आअदा पिअसही चित्तलेहा । [कथमद्यापि नागता प्रियसखी चित्रलेखा ?]

रामा (निपुणमिरूप्य सहर्षं) पेक्ख पेक्ख, इअं आअदा सा । [प्रेक्षस्व, प्रेक्षस्व, इयमागता सा ।]

उषा — (दृष्ट्वा सहर्षमालिङ्ग्य) सहि ! चिरेण लोअणाणि सीदलेमि । कधेहि, आणीदो सो जणो ? [सखि ! चिरेण लोचने शीतलयामि । कथय कथय, आनीतः स जनः ?]

चित्र० — अध इं ? [अथ किम् ।]

उषा — कहिं चिट्ठदि ? [कुत्र तिष्ठति ।]

चित्र० — तुज्झ सअणघरे चिट्ठदि । ता तुम पि अहिसारोचिद-वेसं पदुअ

[तदनन्तरं चित्रलेखा प्रवेशं करोति इति ।]

चित्र० - ई फुल्लवाडी थिक, एतथ प्रियसखी होयतीहि, त एतय प्रवेश करैत छी । (प्रवेशक अभिनय करैत छथि ।)

[तदनन्तरं उषा ओ रामा प्रवेश करैत छथि ।]

उषा - किथेक एखन धरि प्रियसखी चित्रलेखा नहि अयलीहि ?

रामा — (नीरजकां देखि सहर्ष) देखू देखू, इयेह अयलीहि ओ ।

उषा - (देखि सहर्ष आलिङ्गन कय) बड़ीकाल पर आँखि जुड़ओलहुँ । कहू, अनलहुँ ओहि व्यक्ति कें ?

चित्र० - त आओर की ?

उषा - कतय छथि ?

चित्र० - अहाँक शयनगृह मे छथि । तें अहुँ अभिसारक उचित वेश बनाय

तत्र आ हनर । [एष शयनगृहे तिष्ठति । तस्मादपि अभिसारोचितवेशं कृत्वा तत्राभिसर ।]

रामा — कल्याण, गीत सं० — २४

अभरम बसन करिअ तनु साजे,
त्वरित चलिअ सखि पहुक समाजे ॥
जखन शयनगृह करिअ पयाने,
छल भरि करब हृदय समधाने ॥
ठाढ़ि रहब मुख आँपि लजाई,
हठहि बोलिअ जनु कोटि उपाई ॥
बहुविध विनति अनादरि प्रीती,
तखन करब सखि नेहक रीती ॥
रसमय हर्षनाथकवि भानें,
नृप लक्ष्मीश्वरसिंह रस जाने ॥

उषा — सोहनी, गीत सं०—२५

हे सखि हे सखि ! परिहरि मोही,
करजोरि विनति करिअ हम तोही ॥
प्रथम समागम अधिक तरासे,
सुमरि सुमरि जिय उठय हतासे ॥

ओतयक लेल प्रस्थान करु ।

रामा - [गीत सं० - २४]

अभरम बसन = गहना ओ कपड़ा । त्वरित = शीघ्र । पयान = प्रस्थान । हृदय समधाने = हृदय के स्थिर कय धैर्य धरब ।।

उषा — [गीत सं०—२५

परिहरि = छोड़ि दिअ । तरासे = डरा पुलक भरय = आनन्दित होइछ । पहुगेहा = पतिगृह ॥

चलय न चरण सुमय नहि मोही,
धाम भरल तन की कहब तोही ॥
पुलक भरय पुनु कापय देहा,
हम न जायब सखि हुनि पहुगेहा ॥
रसमय हर्षनाथकवि भाने,
नृप लक्ष्मीश्वरसिंह रस जाने ॥

(अत सखी हस्त गृहीत्वा बलात्प्रयाति। सा च सभयलज्ज मनैर्गच्छति।)

रामा—सखि चित्रलेखे ! पेक्ख पेक्ख सहीए रूव। [सखि ! चित्रलेखे ! प्रेक्षस्व प्रेक्षस्व सख्या रूपम्।]

चित्र०—(निपुणनिरूप्य गायति)—

राग केदारा, गीत सं०—२६

चलहि सयनगृह सुन्दरि, सजनी
नील वसन तनु साजि ।
कनकलता जनि बैसल, सजनी
अबिरल मधुकर राजि ॥
स्फटिक बिन्दु अरु सिन्दुर सजनी
बिन्दु बिराजित भाल ।
जनि पङ्कज दल रवि शशि, सजनी
उदित भेल एक काल ॥

[नखन दुहु सखी हाथ पकड़ि बलजोरी लय जाइत छथिन। आ ओ डर ओ लाज सँ मन्द-मन्द जाइत छथि।]

रामा - सखी चित्रलेखा ! देखू देखू, सखीक रूप ।

चित्र० - (नीकजकाँ देखि गबैत छथि)—

[गीत सं० - २६]

नीलवसन तनु = देह पर नील रंगक वस्त्र । कनक-लता = सोनाक लती पर । अबिरल = सघन । मधुकर राजि = भौंराक समूह ।

ललित दशन- रुचि अनुपम, सजनी
अधर नवल दल राज ।
जनि बन्धूक कुसुम तर, सजनी
विकसित कुन्दसमाज ॥
चरण जुगल अनुरञ्जित, सजनी
ललित जुगल-उरु शोभ ।
गज-युग पाणि पसारक सजनी
जनि नव-पल्लव लोभ ॥
जगजननी पदसेवक, सजनी
हर्षनाथकवि गाय ।
रसमय लक्ष्मीश्वरसिंह सजनी
नृप सुख मन हय भाय ॥

अपि च—

मालवरागे गीतम्—२७

चलहि केलिगृह सुन्दरि रे सखि कर गहि लेला ।
प्रथम समागम मन गुनि रे, तनु पुलकित भेला ॥
ललित कोर मुख-पङ्कज रे, छवि देत विसेखे ।
जनि पूरण-शारद-शशि रे, यामिनि परिवेषे ॥
चिकुर बिरचि कसि बान्हल रे, मुख सुन्दर सारे ।
अमिअ लोभ अलि मण्डल रे, विषधर परवारे ॥

स्फटिक बिन्दु = पतरलड़ीक ठोप । पङ्कज दल = कमलक पत्ती पर । रवि = सूर्य । शशि = चन्द्र । दशन-रुचि = दाँतक चमक । अधर नवल दल = ठोर नव पल्लव सन । राज = शोभित । कुसुम = मधुरीक फूलक । कुन्द-समाज = कुन्द फूलक पाँती । अनुरञ्जित = रङ्गल । जुगल-उरु = दुनू जाँघ । गज युग = दू गोट हाथी । पाणि = सूँड़ ॥

[गीत सं० - २७]

तनु = देह । पुलकित = आनन्दित । ललित कोर = सुन्दर किनार (पाक कातक सोभा । मुख-पङ्कज = मुँहरूपी कमल । छवि =

युवजन मानस हाटक रे, अनुखन कर चोरी ।
में जनि कुचयुग बाहुल रे, दिढ़ कञ्चुक डोरी ॥
हर्षनाथ कविशेखर रे रसमय इहो गावे ।
लछिमीसिंह नृपमय रे, मन हम बुझ भावे ॥

(इति सखीः शयनभवनप्रवेशमभि वदन्ति ।)

अनि० (दृष्ट्वा सहर्षं) कथमायातेव मन्ये सखी ? । साधवेना निरीक्ष्य लोचने शीतलयामि । (इति सानन्दरोमाञ्चं पश्यति ।)

(ततस्सखयो बाणपुत्रीमनिरुद्धाय समर्पयन्तः ।)

अनि०—(करे गृह्णाति) ।

रामा—(अनिरुद्धमवलोक्य)—

राग डमरू, गीत सं०—२८

सुपुरुष ! हृदय विचारि रे, सुनिअ वचन अवधारि रे ॥
धनि मोर किछु नहि आन रे, राखब हिनक अभिमान रे ॥

सुन्दरता । पूरण शारद-शशि = शरत् ऋतुक पूर्णचन्द्र । दामिनि घेरि-घेरे = बिजुरी सँ घेरल । सिंदूर बिरचि = केश क गूहि । अमिअ-लोभ = अमृतक लोभें । शशि-मण्डल = चन्द्रमण्डल पर । विषधर परवारे = साँप चलैत अछि । युवजन-मानस = युवकक मनरूपी चोर । हाटक = रत्न । कुचयुग = दुनू स्तनके । दिढ़ = कसिकय । कञ्चुक-डोरी = चोलीक डोरी सँ ।

(सखीका शयनगृह मे प्रवेशक अभिनय करैत छथि ।)

अनिरुद्ध—(देखि सहर्षं) को आबि गेलीह हमर प्रिया ? तें आब हिनका देखि आँखि जुड़ैत छी । (आनन्द ओ रोमाञ्च सहित देखैत छथि ।)

[तखन दुहू सखी अनिरुद्धके उषा समर्पित करैत छथि ।]

अनि० • (दुनू हाथ धरैत छथि ।)

रामा • (अनिरुद्धक प्रति)—

[गीत सं० - २८]

अवधारि = ज्ञान कय । धनि = धन्या नायिका । रोप = तामस ।

पहुप हिनक जनी दोष रे, करिअ राकर नहि रोष रे ॥
सहुय लाख अपराध रे मुजन करथ नहि बाध रे ॥
हर्षनाथकवि भान रे, मिथिलापति रस आन रे ॥

अनि० - परमनुगृहीतोऽस्मि (इति शिरस्यञ्जलिं घटयति) ।

(सकलो निष्क्रामत) ।

उषा—(मलज्जमधोमुखी तिष्ठति ।)

अनि० - (उषाया मुखमुन्नमय्य)—

गीत मुसलानी—२९

विरह दगध मोर तनु अनुमानी ।
वचन-सुधारस सिंचहु सेआनी ॥
बसन दूर कए आनन चन्दा ।
नयन-चकोर मोर करु सानन्दा ॥
कर जोड़ि विनति करिअ हम तोही ।
एक हेरि नयन निहारिअ मोही ॥
अधर अमिअ रस कए परगासे ।
करिअ कृतार्थ अनुगत दासे ॥
तुअ गुण बुझि अएलहुँ एहिठामे ।
परसनि भय परिपूरिअ कामे ॥

सुजन = सुजान व्यक्ति । बाध = बाधा ॥

अनि० - अत्यन्त अनुगृहीत छी । (कर जोड़ि माथ मे लगबैत छथि ।)

[दुनू सखी चल गेलीहि ।]

अनि० - (उषाक मुँह उठाय) •

[गीत सं० - २९]

विरह दगध = वियोग सँ जरल । तनु = देह कें । अनुमानी = विचारि । वचन-सुधारस = वचनरूपी अमृतक रस । सेआनी = चतुर नायिका । बसन = वस्त्र । नयन चकोर = आँखिरूपी चकोर

रसमय हर्षनाथकवि भाखे ।
नृप लक्ष्मीश्वरसिंह रस भाखे ॥

(इति शयने उपवेशयति ।)

(नेपथ्ये—इदो इदो पिअसही ।) [इत इत प्रियसखी ।]

उषा—कथं पिअसहीओ आअच्छन्ति, ता अहम्पि गच्छामि [कथं प्रियसख्या-वागच्छतः, तदहमपि गच्छामि ।] (इत्युत्थाय प्रचलिता)।

अनि०—कथं एतैव एयमी ? तदहमपि कुहरविलसालिकर्णिके गच्छामि । (इति निष्क्रान्तः) ।

(ततः प्रविशति चित्रलेखा-रामे)

रामा—कथं एतमादपाआ रअणी ? तहा हि—[कथं प्रभातप्राया रजनी । तथाहि—]

गीत ललित—३०

सखि सखि ! ललित समय लखु भोर ।
नागर नागरि, रहसि रङ्ग करि शयन करय प्रियकोर ॥

पक्षी (जे चन्द्रमाके देखि प्रसन्न होइछ) । अधर-अमिअ रस = ठोररूपी अमृतक रसके । अनुगत = शरणागत । परसनि = प्रसन्न ॥

(ओछाओन पर बैसबैत छथि ।)

[नेपथ्य मे—'एम्हरहि चलै' प्रियसखी' ।]

उषा—की प्रियसखी लोचन अगोर छथि ? त हमहूँ जाइत छी । (उठि विदा भय चलैछथि ।)

अनि०—की चलै चाहैछ प्रिया ? नें हमहूँ बाहरक घर मे नित्यकृत्यक हेतु जाइत छी । (बहार भय चलैछ ।)

[तखन चित्रलेखा ओ रामा प्रवेश करैत छथि ।]

रामा—की भिनसरबा राति भय गेल ? जेना कि—

[गीत सं०—३०]

नागर नागरि—नायक नायिका । रहसि = रङ्ग = रतुक केलि ॥

धीवर अङ्क, मयङ्क तरणि चढ़ि, शशिकर जाल पसार ।
उडुगन-मीन बझाए चलल जनि, गगन पयोनिधि पार ॥
रवि कर कलित तिमिर-पट-मोचन, प्रकट अरुण-तनु भास ।
लाज पुरब दिश, मुनल कुमुद दृग, लखि कमलिनि कर हास ॥
मलय पवन कम्पित-तनु कमलिनि, कोप अरुण करि अङ्ग ।
उपगत मधुकर, करय निरादर, कुमुदिनि सङ्ग विहङ्ग ॥
पति वञ्चित-रति, युवति विकल मति, करति सौति अभिशाप ।
पति-गञ्जन सहि, विधिक वचन कहि, करत दोष अपलाप ॥
गुञ्जत मधुप, विहङ्गम कूजत, सयन कुपल जनि भाय ।
हर्षनाथ कवि वचन सुधारस, विरल रसिक जन पाय ॥

इदानीमपि पिअसही सअणघरादो ण आअदा । (पुनर्निरूप्य)

धीवर-अङ्क = चन्द्रमाक कलङ्क (कालिमा) रूपी मल्लाह । मयङ्क-तरणि = चन्द्रमारूपी बेड़ (नाओ) पर । शशिकर-जाल = चन्द्रमाक किरणरूपी जालके । उडुगन-मीन = तरेगणरूपी माछ । गगन-पयोनिधि = आकाशरूपी समुद्रक ॥ रवि = सूर्य । करकलित = हाथ (किरण) सँ पकड़ि कय । तिमिर-पट-मोचन = अन्धकाररूपी वस्त्रके हटयबाक हेतु । अरुण-तनु भास = लाल देह (अनुराग) शोभित छवि । पुरब दिश = पूर्वदिशा (नायिका) कुमुदिनीक फूलरूपी आँखि मुनि लेलक ॥ मलय पवन = दक्षिणहाँ हवा सँ काँपैछल देहवाली कमलिनी । कोप अरुण = क्रोध सँ लाल । उपगत मधुकर = आयल भौंरा के (गोर मे उपस्थित नायकके) । कुमुदिनि सङ्ग-विहङ्ग = कुमुदिनीरूपी नायिकाक समागम सँ ललौन भूरा रङ्गक (भौंरा के) ॥ पतिवञ्चित रति = पतिक द्वारा समागम सँ वञ्चित (फूल कमल रेल) । पति गञ्जन सहि = नायक नायिकाक फूलभरि सहि के । दोष अपलाप = नायक अपन दोषके मेटैत छथि ॥ मधुप = भौंरा । विहङ्गम = पक्षी । सयन = शयनक, शयनगृहक ॥

एखन धरि प्रियसखी शयनगृह सँ नहि अयलीह अछि । (फेर

कथं आकारराजेव ? [इदानीमपि प्रियसखी शयनगृहाभ्यागता । कथं मागतेव ?]

उषा—(झणझणन्नूपुरं सख्यामालिङ्गति ।)

रामा—सखि ! कथेहि कथेहि पढम संगम वृत्तम् । [सखि कथय प्रथमसंगमवृत्तम् ।]

उषा—(गीतेन)

ललित, गीत सं०—३१

मन दय सुनिअ वचन मलि आजे ।
सुपहु समागम कहितहुँ लाजे ॥
रसमय पहु अञ्चल गहि लेला ।
लाज वदन मोर अवनत भेला ॥
अखन अधर रस कमलनि पाने ।
लाज निकुंद कुजि कयल पयाने ॥
कुचयुग परसि कएल हँसि कोरा ।
लाज लजाए पड़ाइलि मोरा ॥
सुमरि सुमरि सखि ! तस व्यवहारे ।
गदगद स्वर पुलकित तनु भारे ॥
रसमय हृपनाथकवि भाने ।
नृप लक्ष्मीश्वरसिंह रस जाने ॥

देखि) की आकिये गेलीहि ?

उषा—(पायल के मनझनदीन दुइ सखीके आलिङ्गित करैत छथि ।)

रामा—सखी ! कहु कहु, प्रथम-समागमक वृत्तान्त ।

उषा—(गीतक द्वारा)— [गीत सं० - ३१]

अवनत = झुकल । लाज निकुंद = लाज सँ केश मूजि । पयाने = विदा भेल । कुचयुग परसि = दुनू स्तनक स्पर्श कय । कोरा = अङ्कमे । लाज लजाए = लज्जा स्वयं लज्जित भया । पुलकित तनु = आनन्दित शरीर ॥

रामा—सखि बाणपुरि ! तुम्हारा घरे कलअलो सुणीअदि, ता वअणि गच्छहा [सखि बाणपुरि ! तव तातस्य गृहे कलकलः श्रूयते । तद्वयमपि तत्र गच्छामः ।]

(इति निष्क्रान्ताः) ।

॥ इति अनिरुद्धसमागमो नाम तृतीयोऽङ्कः ॥

★

अथ चतुर्थोऽङ्कः

(ततः प्रविशति बाणासुरः ।)

बाणासुरः—कः कोऽत्र भोः !

द्वारी—(प्रविश्य) जअदु जअदु देओ । एसोऽह्मि, आणवेदु देओ । [जयतु जयतु देवः । एषोऽस्मि, आज्ञापयतु देवः ।]

बाणः—कथय मदन्तःपुरवृत्तम् ।

द्वारी—(गीतेन कथयति)

रामा—सखी बाणपुरी ! अहांक पिताक घर मे हल्ला सुनि पड़ैछ त हमरहु-लोकनि चली ।

[सभ बहार भेलि]

॥अनिरुद्ध-समागम नामक तेसर अङ्क समाप्त ॥

चारिम अङ्क

[बाणासुर प्रवेश करैत छथि ।]

बाण—कथा कहि ।

द्वारी—(प्रवेश कय) जय हो जय हो देवक । एहि छी आज्ञा देथ देव ।

बाण—कहहु हमर अन्तःपुरक (अन्दरक) समाचार ।

द्वारी—(गीतक द्वारा कहैछ)—

नट रागे, गीत सं०--३२

कि करब नीच-कथा परगास
कहि न सकिअ किछु, होअ तरास ॥
नागर एक मनोभव-वेश,
कमल कुमरि-मन्दिर परवेश ॥
भनिह तनिक बस राजकुमारि,
एतया अयलहुँ सपन—निहारि ॥
किअरिअ मन गुनि एकर विचार
राजकुमरि भेलि कुलक अङ्गार ॥
हर्षनाथ कवि मन दय गाव,
नृप लक्ष्मीश्वरसिंह बुधु भाव ॥

बाणः - हा हतोऽस्मि !! महति कुले कलङ्को जातः । (सर्वेऽलज्जम्) --

लब्धा शुद्धकुले जनिस्सुविहिता सेवा कृतानोपते
निर्जिताखिलसर्वदैत्यदानवकुलं लब्धः प्रतापोऽधिकः ।
भ्रातृत्वं सुरजन्मनोऽप्यधिगतस्तस्यापि मे मानुषात्
सञ्जातं कुलभर्षणं कथमहो चित्रा गतिः कर्मणाम् ॥१२॥

[गीत सं० - ३२]

तरास = डर । नागर = चतुर युवक । मनोभव-वेश = कामदेवक रूपमे (अतिसुन्दर) । कुमरि मन्दिर = कुमारी ककाक घर मे ॥

बाण—हाय मुइलहुँ !! महान कुलमे कलङ्क लागल । (निकटता (संग) —

शुद्ध कुल मे जन्म पाबि पार्वतीपतिक (महादेवक) सेवा कएल, सकल देवता, दैत्य ओ राक्षस कें जीति पंच प्रताप पाबल । कार्तिकेयक भाए होएबाक गौरव सेहो प्राप्त कएल । एहन बस पओनिहारी हमरा मनुष्य सं कुलक गञ्जन भेल ! हाय!! कर्मक गति विचित्र छैक ॥१२॥

अपि च—

ललित रागे, गीत सं०--३३

कओन दुरित फल बिहि भेल बके
एहन पवित्र कुल भेल कलङ्के ॥
कि करब आब कुलक अभिमाने,
से जनमलि जे कटलक काने ॥
सुर नर मुनिगण परिजन साथे,
कोन परि करर करब हम माथे ॥
मन कर बरल करिअ हम पानें,
अगिनि गमन करि तेजिअ परानें ॥
हर्षनाथ कवि मन दय गावे,
नृप लक्ष्मीश्वरसिंह बुधु भावे ॥
(पुनस्सक्रोधं करान् करे प्रपीड्य)—

वसन्त रागे, गीत सं०--३४

सहस्रभुज मोर करि अनादर, कमल कुल अपमान भो ।
जहन जे जन परम दुर्जन, हरब तनिक परान भो ॥
दैत्य दानव यक्ष राक्षस, देवगण लय साथ भो ।
तनिक होयि सहाय अओ पुनु, सकल कटाय माथ भो ॥

आओरा, [गीत सं०—३३]

दुरित = पाप । बिहि भेल = विधाता विपरीत भेलाह । गरब = विष ॥

(फेर क्रोधपूर्वक हाथकें हाथसं दाबि)—

[गीत सं०—३४]

सहस्रभुज मोर = हजार भुजावला जे हम तकरा । दैत्य = राक्षस जे दितिक सन्तान अछि । दानव = राक्षस जे दनुक सन्तान अछि । यक्ष = देवयोनिविशेष । राक्षस = देवयोनिविशेष जे निकषाक सन्तान

हमर भुजदर असुर सुर नर, सभक कम्पित गात ओ ।
के एहन जग माह, जे जन करथि नहि प्रतिपात ओ ॥
करब आज अन्ह र दहदिस, विजित लय रण जाए ओ ।
हुनेसाथ विचारि भय, गिरिजा चरण हिय लाए ओ ॥

(पुनः सक्रोध) शृणु रे द्वारिन् ! सत्वरमयाहि किङ्करसैन्य-समुद्योगाय ।

द्वारी—तथा । [तथा ।] (इति निष्क्रान्तः ।)

(नेपथ्ये भो भो किङ्करादिसर्वे ! सीघ वेष्टयित्वा सज्जीभवन्तु भवन्तः ।)

(पुनर्नेपथ्ये—वेष्टितमस्माभिस्सज्जीभवामः ।)

बाण:—कथमागत किङ्करसैन्यम् ?

(पुनर्नेपथ्ये - प्रहरन्तु प्रहरन्तु भवन्तः । एष रक्षिसङ्घः परिघ भ्रामयन्नेति ।)

बाण - [illegible]

अछि । असुर = दैत्य । गात = शरीर । जगमाह = संसारमध्य । प्रतिपात = पाएर पड़ मोर झुकबैत छथि । दहदिस = दशो दिशा । विजित = जीत । रण = युद्धक्षेत्र ।

(फेर क्रोधक्य) सुन रे द्वारपाल ! झटदय जो, सेवक सो सेनाक उद्योगक हेतु ।

द्वारी—जेस । (बहार भय गल ।)

[नेपथ्य मे—'हे हे सेवकलोकनि ! कोठाके घेरि बहालोकनि तैयार रहू' ।]

[फेर नेपथ्य मे—'हमरासब ड्योढ़ीके घेरलहुँ" ।]

बाण—की सेवक-सैन्य आबि गेल ?

[फेर नेपथ्यमे—'मारू मारू बहौमभ । ई चमचोर लोहाक डण्डा घुमाय रहल अछि' ।]

बाण—की युद्ध उपस्थित गल ? न हगइ' ओहि अभगलाक पराक्रम आय देखि-

पश्यामि । (इति निष्क्रान्तः) ।

(ततः प्रविशति परिघपाणिरनिरुद्ध ।)

अनि० - एषोऽस्मि सुरक्षित सान्त्वयामि । अद्यास्माद्विक्रम पश्यन्तु लोकाः ।

(नेपथ्ये - हा हतास्मि !! अस्मत्पुत्रस्य का अवस्था भविष्यति ! [हा हतोऽस्मि ! अस्मत्पुत्रस्य का अवस्था भविष्यति ?]

अनि० - कथमिदमस्मन्मन्त्रिणो [illegible] किमपि विलपन्ती इत एवाभिवर्तते । तदावयोर्नो समादवासयामीति । (पार्श्वे तिष्ठामि ।)

[illegible] प्रविशन्तुपा । पुनर्हा हतास्मि' [हतोऽस्मि । [इत्यादि पठति)

अनि० - प्रिये न भेतव्यम् ।

(दोहा)

बाण सहित जत असुरगण, सभक करब हम नाश ।
अचिर मिलब हम तोहि पुनु, सुन्दरि तेजह तरास ॥

सेक, (बहार भय गेलाह ।)

[तखन हाथमे लोहाक डण्डा लेने अनिरुद्ध प्रवेश करैत छथि ।]

अनि० [illegible] नाश करैत छी । आउ हमर पराक्रम देखओ लोकसभ

[नेपथ्य मे—'हाय मुइलहु" !! आर्यपुत्रक की अवस्था हेतनि ! ']

अनि —की [illegible] उषा [illegible] विलाप करैत एहनहि अबैत छथि ? [illegible] हिनका आश्वासन देत छी । (हुनक प्रतीक्षा करैत ठाढ़ रहैत छथि ।)

[तखन उषा प्रवेश करैत छथि । फेर 'हा हतास्मि' इत्यादि वर्जन छथि ।]

[illegible] भय गेलाह ।)

(इत्युक्त्वा समाश्वास्य सञ्चरं युद्धाय निष्क्रान्ता।)

उषा • कथं गदा अकस्मादुत्पन्ना। ता अहमपि दृढं व्यपादेन गच्छामि [कथं गत आर्यपुत्र ? तदहमपि वेगेन प्रमादानन गच्छामि।] इति निष्क्रान्ता।)

[अथ विष्कम्भक]

(ततः प्रविशति चित्रलेखा)

चित्रलेखा• अथ रणवृत्तं विज्ञाप्तुं पश्चिमद्वारे चारो निरीक्षते। [इयं रणवृत्तं विज्ञातुं प्रतिद्वारविचरामि।] (पुनस्सर्वं वीक्ष्य) अयं आगतो एव।

(ततः प्रविशति चारः)

चारः • इयं चित्रलेखा। सम्भावयामि (इत्युपसर्पति)।

चित्र० • कथय कथय रणवृत्तम्। विजय कथय रणवृत्तम्।

चारः • शृणु सर्वम् -

गीत लाउनि--३५

रथ चढि बाण-महासुर आयल, लय चतुरङ्ग बल धीरे।
कर गहि परिघ असुर-कुल मारल, अनिरुध यादव वीरे ॥१॥

उषा — की घल गेलाह आर्यपुत्र ? तं हमहूँ देखीक प्रमान करबाक लेल जाइत छी। (बहार भय गेलि।) ॥

[विष्कम्भक]

[तखन चित्रलेखा प्रवेश करैत छथि।]

चित्र० युद्धक समाचार बुझबाक हेतु पटाञ्चल पूर्व किएक देरी करैत अछि ? (फेर चारूभर देखि) इयेह त आबिए गेल।

[चार प्रवेश करैत।]

चार ई चित्रलेखा थिकीह। त आब समीप जाइत छी। (समीप जाइत छथि।)

चित्र०—कहह कहह, युद्धक समाचार।

चार—नूतन सबटा।

[गीत सं०—३५]

१ चतुरङ्गबल हाथी घोड़ा रथ ओ पैदल एहि चारू अङ्ग सँ युक्त

चित्र० • (सहर्षं) उज्जीवितास्मि। ततो ततो [विजीवितास्मि। ततस्ततः।]

चारः—

काम-तनय हर सकल पठायल, जय लय रिपुबल वीरे।

चित्र० • (सहर्षं) इदं पारिजातमिव नेत्रे इव पारितोषिकं गृहाण। (इत्यङ्गुलीयकं ददाति)। ततो ततो [ततस्ततः]।

चारः •

नयन निरखि कहुँ कुपित भेल पुनु, बाण-नृपति रण धीरे ॥२॥

चित्र० - हा सशङ्कास्मि। ततो ततो [हा मन्यितास्मि। ततस्ततः।]

चारः -

जगमहि अनिरुद्ध समान आन नहि, रिपुकुल कम्पित जाही।
नागपाश लय बुद्धकय बँधलक, कयल अपन बस ताही ॥३॥

चित्र० - (सशङ्कं) हा हतास्मि। ततो ततो। [हा हतास्मि। ततस्ततः।]

चारः —

कामतनुज तन कल्पत जपजन, तेज न निज अभिमाने।
नृप लक्ष्मीवरसिंह बूझथि रस, हर्षनाथ कवि भाने ॥४॥

चित्र०—ततो ततो। [ततस्ततः।]

सेना। धीरे=धैर्यवान्। परिघ—लौहदण्ड ॥

चित्र०—(सहर्षं) आर्य पुनि आयल। तखन ?

चार • कामपुत्र अनिरुद्धक डरें सभ शत्रुपक्षक वीर भागि गेल।

चित्र० —(सहर्ष) ई इनाम लएह। (औंठी दैत छथि।) तकर बाद ?

चार — अपना अंगुलि सँ ई देखि पराक्रमी राजा बाण कुपित भेलाह ॥२॥

चित्र० - हाय ! संदेह मे पड़लहुँ। तखन ?

चार—रिपुकुल=शत्रुगण। कम्पित जाही=अनिरुद्ध सँ थरथरित अछि। नागपाश=सर्पबन्धनी। बुद्धकय=कतिपय ॥३॥

चित्र०—(विकलतापूर्वक) हाय मुइलहुँ ! तखन ?

चार • काम तनुज=कामक पुत्र (अनिरुद्ध) के। तन=देह मे। निज अभिमाने=अपन गर्व ॥४॥

चित्र० • तकर बाद ?

चा० :- [illegible] बाणासुर [illegible] न हृष्यस्य इति कुम्भाण्डा निवारयामास।

चित्र० - सुट्ठु [illegible] मन्त्रराएण। [illegible] चिअगहीए णिवेदिदु [illegible]। तुम पि पुणो तहत्तो विआणिदु [illegible] अहिसर। सुट्ठु कृतं मन्त्रराजेन। तदनावृत्तं प्रियसखीं निवेदयितुं गच्छामि। त्वमपि पुनस्तद्वृत्तं विज्ञातुं तत्राऽभिसर॥

चार० - तथा।

(इति निष्क्रान्तौ)

(इति विष्कम्भकः।)

(ततः प्रविशति नागपाशबद्धोऽनिरुद्ध)

अनि०—(सर्पबन्धनबाधाभिनाटयन् स्वगतं) किमिदानीमनुष्ठेयं, कथं बन्धमोक्षो भविष्यति? (विमृश्य) भगवत्या दुर्गायाः प्रसादमात्रेण को वा प्रतीकारो भविष्यति? तथाह्यमुपलोकयामि। (साञ्जलिबन्धं प्रकाशम्)—

गीत सोरठ--३६

जय जय महिषविनाशिनि भगवति, सिंहगमनि जगवन्दे।
त्रिभुवनतारिणि, विपदनिवारिणि, सकल भुवन अवलम्बे॥
त्रिदश तपोधन, दनुज मनुज गण विकुर निकर अभिरामे।
तुअ पद चिन्तन, विमुख सतत मन, किछु होएत परिणामे॥
हमर दुरित मति, जानि सकल गति, करिअ न अतिशय रोषे।
तनय रहित मति, करय अनलगति, कहिअ कवन विधि दोषे॥
तुअ गुण निगम अगम हरिहर-विधि कहि न सकथि अनुपामे।
अनेक जनम तप करथि जतन दय, तुअ पद दरशन कामे॥
सुमिय हमर अपराध कृपामयि, करिअ अभय वर दाने।
विरिञ्चिनिदिनि पदपङ्कज मधुकर, हर्षनाथ कवि भाने॥

(इति नाट्यायति।)

चार० - [illegible] अनिरुद्धके मारबाक हेतु संयार बाणासुरके मन्त्री कुम्भाण्ड रोकलविह्न जे 'ई अमाय विवाह' हिनका मारब उचित नहि'।

चित्र० - महादेव कथलनि मन्त्रिराज [illegible] सुद्धक समाचार प्रियसखी कें निवेदित करबाक लेल जाइत छी। तोंहू फेर ओहि समाचारके बुझबाक लेल ओतय जाह।

चार० - तथा।

[दुनू गोटा बहार भेल।]

[विष्कम्भक[1] समाप्त]

[आब नाग-फाँसी मे जकड़ल अनिरुद्ध प्रवेश करैत छथि।]

अनि०—(साँप सँ बान्हल रहबाक कष्ट प्रदर्शित करैत मनहि मन) एखन की करी, कोना बन्धन सँ छुटकारा होएत? (विचारि) भगवती दुर्गाक

---

१ - भूत वा भविष्य कथांशक मध्यम-पात्र द्वारा वर्णित अंक मध्य वा अंकारंभ मे जे जोड़ल रहैछ से विष्कम्भक कहबैछ।

कृपाक बिना कोन प्रतीकार होएत? [illegible] हुनकहि गोहरबैत छी। (कर जोरि सुनाय)—

[गीत सं०—३६]

महिष विनाशिनि=महिषासुरक नाश करनिहारि। सिंहगमनि=सिंह पर चलनि हारि॥ त्रिदश तपोधन=देवता, ऋषि, दैत्य जो मनुष्यसभक मोचक केशक समूह भिड़ला सँ सुन्दर जे अहाँक चरण कमल ध्यान सँ विमुख जे मन रहय नँ। किछु=किछओ (विपरीते)। परिणामे=फल। दुरित-मति=पापबुद्धि। रोषे=तामस। तनय=पुत्र। रहित मति=बुद्धिहीन। अनलगति=अमंगल, अनुचित॥ निगम-अगम=वेद जो शास्त्रशास्त्र मे। हरि हर-विधि=विष्णु महादेव जो ब्रह्मा। अनुपामे=अकर उपमा नहि हो॥

(हुनक ध्यान क[illegible] छथि।)

(ततः प्रविशति भक्तिपरतन्त्रा दुर्गा)

दुर्गा - प्रसन्नाऽस्मि । तत्राभीष्टमभ्यर्थय ।

अनि० - नागबन्धनान्मुक्तिर्भवतु ।

दुर्गा - एवमस्तु । तथापि कृष्णागमनपर्यन्तमत्रैव त्वया भवितव्यम् । (इति निष्क्रान्ता ।)

अनि० - अथ कुतैव जगदम्बा ? (विमृश्य सहर्षं) विघटितमम नागबन्धनदुःखं भगवत्याः प्रसादात् । तदिदानीमग्रतोऽपि तदीयचरणकमलध्यानतः कृष्णागमनप्रतीक्षमाणेन कुत्रचिद्वृत्तिरवश्यम् (इति निष्क्रान्तः) ।

इति अनिरुद्धबन्धमोक्षणो नाम चतुर्थोऽङ्कः ॥

अथ पञ्चमोऽङ्कः

(ततः प्रविशति चिन्ताकुलः कृष्णः)

कृष्णः - कथमनिरुद्धान्वेषणाय प्रेषितदूतश्चिरायते ? (पुनस्सञ्चिन्त्य) अयमागत एव ।

[तखन भक्ति सँ पराधीन दुर्गा प्रवेश करैत छथि ।]

दुर्गा - प्रसन्न छी, तँ अभीष्ट वरदान माङ्ग ।

अनि० - नागबन्धन सँ छुटकारा होअय ।

दुर्गा - एहिना हो । तेयो कृष्णक अयबाधरि हिनू बन्हलो अहीं बान्हल जकाँ रही । (बहार भय गेलीहि ।)

अनि० - की जगदम्बा दर्गा चलि गेलीहि ? (विचारि सहर्ष) भगवतीक कृपासँ हमर सर्पबन्धनक दुःख नष्ट भेल । त एखन हमहूँ हुनक चरणकमलक ध्यान करैत कृष्णक आगमनक प्रतीक्षा करैत कतहु रही ।

[बहार भय गेलाह ।]

॥ अनिरुद्धक बन्धन सँ छुटकारा नामक चारिम अङ्क समाप्त ॥

पाँचम अङ्क

[आब चिन्ता सँ व्याकुल कृष्ण प्रवेश करैत छथि ।]

कृष्ण - अनिरुद्धकेँ तकबाक हेतु पठैल दूत किएक देरी करैत अछि । (फेर चारूकात देखि) एहेन तँ बाजिये गेल ।

(ततः प्रविशति चारः)

चारः - जयति जयति देवः ।

कृष्णः - कथय कुत्रापि मिलितोऽनिरुद्धः ?

चारः -

गीत सायनी--३७

अहल भेल कानन, जत हम जानल, ओहन कथ परदेशे
तेहि सकल भय, परम पतन दय, कतहु न पाओल उद्देशे ॥
पारिजात तव हरि लय आनल, मैं सुरपति कँह रोपे ।
तैं अति कामतनय हरि लय गेल, ई हौब तकर विशेषे ॥

(अथवा)

हृदय निरखि तनु, करब दोसर पुनु, सुन्दर तनु निरमाने ।
ई जनि मन करि, लय गेल निह हरि ई हौब गम अनुमाने ॥
अँ चिह बुझि भेल, से हम कहि देल, अपनहि करु अनुध्याने ।
भूप लक्ष्मीश्वरसिंह गुणनिधि रस, हृदयनाथ कवि भाने ॥

कृष्णः - भवतु वादी । न देवता अधमतयो भवन्ति । तदनुरेव गत्वाऽनिरुद्धमानयत्वम्

[तखन चार प्रवेश करैत अछि]

चारः - कृष्णदेवक जय हो, जय हो ।

कृष्णः - कतहु कतहु भेटलथुन अनिरुद्ध ?

चारः -

गीत हो० - ३७

[illegible] । कानन [illegible] = [illegible] । उद्देशे = [illegible] । पारिजात = पारिजातक गाछ केँ इन्द्रक वन सँ कृष्ण अनने छलाह । सुरपति कँह = इन्द्र केँ । कामतनय = [illegible] । [illegible] = [illegible] । तनु = देह । निह = [illegible] । अनुध्याने = बार बार चिन्तन ।

कृष्णः - [illegible] । [illegible] आ अनिरुद्धक अन्वेषण करह ।

चारु—देव जे आज्ञा देथि। (महाराज भय गेल।)

कृष्ण—(विकलतापूर्वक) यत्न पूर्वक अन्वेषण कयलो पर अनिरुद्ध नहि भेटैत छथि, ओ ड्योढ़ी मे हुनक दुःख सँ भेल अशान्ति नहि हटैत अछि। तं एतय की करी? (विचारि आकाश दिस स्मरण करैत) नारदक द्वारा सब किछु बुझि सकैत छी। ओ तँ सभठाम जाइत छथि ओ सब टा जनैत छथि। (नारदक स्मरण करैत छथि।)

[तखन आकाश बाटें नारद प्रवेश करैत छथि।]

[गीत सं०—३८]

गगन गमन—आकाशगामी। भाल तिलक=कपार पर टीका। धवलित केश=उजरा केश। असुमन=सतत। कलह=झगड़ा। बिनु-

हर्षनाथ करि मन दय गाव।
सुख लक्ष्मीश्वरसिंह दुःख भाव॥

कृष्णः—(प्रणमति)।

नारदः—(शुभाशिषं दत्त्वा) कथय कथम केन हेतुना स्मृतोऽस्मि?

कृष्णः—केनापि हेतुनाऽनिरुद्धो न मिलति तत्कथय, त्रिभुवनमध्ये भवता कुत्रापि दृष्टः?

नारदः—बाणपुत्री-ऊषाचित्रलेखया शोणितपुरं चित्रलेखया नीतः। तत्र च बाणासुरेण सह सङ्गरं कृत्वा नागपाशेन बद्धस्तिष्ठति।

कृष्णः—(ससम्भ्रमं) कथमेतत् न तथ्यम्?

नारदः—वरभद्रेण स्नाक्ष्या सह गरुडमारुह्य मत्वरं गन्तव्यम्। अहमप्याकाशमार्गेण गत्वा सङ्गरमालोकयन् चिरेण चक्षुषी शीतलयिष्यामि।

कृष्णः—तथेति (गरुडं स्मरति)।

(ततः प्रविशति भगवान्कृष्णस्तिलकराचरो गरुडः)

[illegible] 'बिना कारणक। तुल=सरिस य। छथि कहँ मूल=कारण देखि कें॥

कृष्ण (प्रणाम करैत छथि।)

नारद (शुभाशीष दय) कहू कहू कोन हेतुसँ हमर स्मरण कयल अछि?

कृष्ण यत्नहु द्वारा हरण कयल गेल अनिरुद्ध नहि भेटैत छथि। से कहू, त्रिभुवन मे धर्मत अहाँ हुनका कतहु देखलियनि अछि?

नारद बाणासुरक पुत्री ऊषाक प्रिय करबाक इच्छा सँ चित्रलेखा हुनका शोणितपुर लय गेलि। ओतय बाणासुरक संग युद्ध कय नागपाश सँ बान्हल छथि।

कृष्ण (हड़बड़ाइत) आश्चर्य कोना जायब?

नारद बलभद्र ओ प्रद्युम्नक संग गरुड़ पर चढ़ि शीघ्र जायब छथि। हमहुँ आकाशमार्ग सँ कथ्य युद्ध देखैत बहुत दिन पर आँखि जुड़ायब।

कृष्ण—बेश। (गरुडक स्मरण करैत छथि।)

[तखन पौलिक हवा सँ पंख चरचरकें कम्पित करैत गरुड़ प्रवेश करैत छथि।]

गरुड़ः—जयति जयति देवः । किमयं समुपोऽस्मि ।

कृष्णः—(सादरं) आकर्णितरुद्धमोक्षणाय शोणितपुरं गन्तव्यम् ।

गरुड़ः—तथा (इत्युत्थाय्योत्थाप्य) ।

कृष्णः—[illegible] ? (पुनर्निरूप्य) गरुडा-गमनावधि ।

(ततः प्रविशति बलभद्र-प्रद्युम्नश्च)

कृष्णः—([illegible] प्रति) अनिरुद्धमोक्षणाय सर्वैः-समाभिः शोणितपुरं गन्तव्यम् ।

बलभद्रप्रद्युम्नौ—एवमस्तु ।

(इति निष्क्रान्ताः) ।

(ततः प्रविशति बाणासुरः)

बाणः—कथमिदानीमेव ज्वरो नेदानीमभ्यागतः ? (पुनर्निरूप्य) अयमागत एव ।

गरुड़ः—देवक जय हो, जय हो । कियेक स्मरण कयल अछि ?

कृष्ण—(सादर) भाइ ! अनिरुद्धक छोड़यबाक लेल शोणितपुर जयबाक अछि ।

गरुड़—बेस । (उत्कण्ठाक अभिनय करैत छथि ।)

कृष्ण—[illegible] बलभद्र आ प्रद्युम्न किछेक नहि अयलाह अछि ? (फेर देखि) हमेह दुहु गोटा आबिये गेलाह ।

[तखन बलभद्र ओ प्रद्युम्न प्रवेश करैत छथि ।]

कृष्ण—(देखि [illegible] बलभद्र ओ प्रद्युम्नक प्रति) अनिरुद्धक छुड़यबाक हेतु हमराओ सभकें ओ शोणितपुर जायब ।

बलभद्र + प्रद्युम्न—एहिना हो ।

[सभ बाहर भय गेलाह ।]

[तखन बाणासुर प्रवेश करैत छथि ।]

बाण—बड़ोकाल बजाओल ज्वर एखनो धरि नहि कियेक आयल ? (फेर देखि) हमेह आबिये गल ।

(ततः प्रविशति ज्वरः)

गीत मालव—३९

अति उनमत्त भयङ्कर वेश,
रोगराज ज्वर देल परवेश ॥
तीनि चरण, तिनि मुख विकराल
नव लोचन, छओ बाहु विशाल ॥
नयन निमीलित आलस पाए,
हाथ भसम, अनुछन हफिआए ॥
पीबिश झुकि झुकि कएय पयान,
जाहि परसय ताहि हरए परान ॥

ज्वरः—जयति जयति देवः । कथय, किमर्थमाहूतोऽस्मि ?

बाण—बलभद्रप्रद्युम्नाभ्यां सह यदुवीरः कृष्णोऽस्माभिर्योद्धुं समागतः । तदद्य भवता सर्वतःसेनाव्यूहं विधाय रणभूमौ सावधानेन भवितव्यम् ।

ज्वरः—यथाज्ञापयति देवः । (इति निष्क्रान्तः) ।

बाणः—(सर्वतो विलोक्य) कथं गत एव रोगराजः । तदस्माभिरपि रथमारुह्य रणभूमौ गन्तव्यम् । (इति निष्क्रान्ताः) ।

[उनमत्त ज्वर प्रवेश करैछ ।]

[गीत सं०—३९]

उनमत्त [illegible] चरण । नव लोचन = नओटा आँखि । नयन-निमीलित = आँखि मुनने । भसम = छाउर । अनुछन = हरदम । पयान = यात्रा । परसय = छुबय ॥

ज्वर—देवक जय हो, जय हो ।

बाण०—बलभद्र ओ प्रद्युम्नक संग यादव-वीर कृष्ण हमरासभक संग लड़बाक हेतु अयलाह अछि । तें आउ अहाँ सभदिस सँ सेनाक व्यूह (विन्यास) बनाय युद्धक्षेत्र मे सावधानी सँ रहब ।

ज्वर—देवक जे आज्ञा । (बहार भय गेल ।)

बाण०—(चारूभर देखि) की चलि गेलाह रोगराज ? तें हमरोसभ रथपर चढ़ि रणभूमि जाइ । (बहार भय गेलाह ।)

(ततः प्रविशति चित्रलेखा)

चित्र० - बाणणिग्गहणिमित्तं सिरीकण्हो अआदो, ता इमं वुत्तं सहीए पिअअणे णिवेदिदुं गच्छेमि [बाणनिग्रहनिमित्तं श्रीकृष्ण आगतस्तदिदं वृत्तं सख्याः प्रियजने निवेदितुं गच्छामि। (इति गमनमभिनयति)।

(ततः प्रविशति अनिरुद्धः)

अनि० - कथमिव चित्रलेखा? चित्रलेखे! कथय शोणितपुरवृत्तान्तम्।

चित्र० - सिरीकण्हो आअदो दीसदि [श्रीकृष्ण आगतो दृश्यते]।

अनि० - सखि निगृहीत एव बाणः।

चित्र० - सव्वं सम्भावीअदि। [सर्वं सम्भाव्यते]।

(नेपथ्ये गीयते)

गीत अहीरी सं०—४०

गरुड़ चढ़ि बलदेव संग लय, कामदेवक साथ ओ।
चक्र कर गहि धाए पहुँचल, शोणितपुर यदुनाथ ओ॥

[तखन चित्रलेखा प्रवेश करैत छथि।]

चित्र०—बाणकें दमन करबाक हेतु श्रीकृष्ण अयलाह अछि, से ई समाचार सखीक प्रियलोक कें सुनयबाक लेल जाइत छी। (जयबाक अभिनय करैत छथि।)

[तखन अनिरुद्ध प्रवेश करैत छथि।]

अनि०—की ई चित्रलेखा थिकीह? चित्रलेखा! कहू शोणितपुरक समाचार।

चित्र० - श्रीकृष्णकें आयल देखैत छियनि।

अनि०—तखन तें बाणक दमन भइये गेल।

चित्र०—सब सम्भव अछि।

[नेपथ्य मे गाओल जाइत अछि।—]

गीत सं०—४०

कर गहि—हाथमे लय। धाए—दौड़ि। यदुनाथ—कृष्ण। सङ्गर—

भेल सङ्गर अति भयङ्कर, बाण किङ्कर—सङ्ग ओ।
हनल रिपुदल समर अनिरुद्ध कयल ज्वर तनुभङ्ग ओ॥
रोगराज - विकाय मुनि हरि, कयल तसु जिवदान ओ।
कहल बहुविधभाग तनु करि, फिरह सकल जहान ओ॥
कुपित दय चढ़ि बाण पहुँचल, घोर सङ्गर भेल ओ।
कृष्ण बाणक बाहु काटल छाड़ि बुद भुव देल ओ॥
बाण हरषित भेल पुनु, त्रिपुरारि सँ वर पाए ओ।
हर्षनाथ विचारि मन, गिरिजाचरण मन लाए ओ॥

अनि० -(सहर्षं स्वगतं) गूढमयमस्मत्पितामहविजयो वन्दिजनैर्गीयते। (प्रकाशं) चित्रलेखे! श्रुतम्भवत्या?

चित्र०—भद्द सुदं। [भद्रं श्रुतम्।]

(पुनर्नेपथ्ये "इत इतो भवन्तः"।)

चित्र०—कध णारद - णिद्दिट्ठ - मग्गो बलहद्द-पज्जुण्णेहिं सह सिरीकण्हो एदो जेव्व अहिवट्टदि, ता अहुणि तस्स दसणत्थं अज्ज लोअणाइं सीदलइस्सं। [कथं नारददिष्टमार्गं बलभद्रप्रद्युम्नाभ्यां सह श्रीकृष्ण इत एवाभिवर्तते, तदहमपि तस्य दर्शनेनाद्य लोचने शीतलयिष्यामि॥

युद्ध। किङ्कर-सङ्ग सेवक सहित। हनल रिपुदल समर—युद्ध मे शत्रुक सेना कें मारलनि। ज्वर तनुभङ्ग—ज्वर कें अङ्गभङ्ग। रोगराज-विकाय—रोगक राजा ज्वरक कातव। हरि—कृष्ण। बहुविध भाग तनु—देहक बहुतो भाग (खण्ड) कय। जहान—संसार। कुपित—समरोयल। घोर सगर—प्रचण्ड युद्ध। त्रिपुरारि सँ—महादेव सँ।

अनि०—(सहर्षं स्वगतं) निश्चित ई हमर पितामहक विजय भाटसभक द्वारा गाओल जाइछ। (सुनाय) चित्रलेखा! सुनल अहाँ?

चित्र०—नीकजकाँ सुनल।

[फेर नेपथ्य से—"एम्हर बाटें अपने लोकनि"।]

चित्र० की नारदक द्वारा रास्ता देखओला पर बलभद्र ओ प्रद्युम्नक संग श्रीकृष्ण एम्हरहि अबैत छथि? तँ हमहूँ हुनक दर्शन सँ आइ आँखि जुड़ायब।

अनि०—एवमेवम् ।

(ततः प्रविशति बलभद्रप्रद्युम्नाभ्यां सह गरुडारूढः श्रीकृष्णो नारदश्च ।)

नारदः—एष नागपाशबद्धोऽनिरुद्धस्तिष्ठति । सहेन्द्रमोचयतु गरुडो नागपाशात् ।

गरुडः—तथा । (इत्युपसर्प्येति । नागाः बलायन्ते) ।

अनि०—एषोऽनिरुद्धोऽहं भवतः प्रणमामि ।

बलभद्रः—सर्वदा कल्याणमाप्नुहि ।

कृष्णः—कथं पुनरस्माकं स्नुषा बाणपुत्री ? चित्रलेखे ! प्रवेशय ताम् ।

चित्र०—तथा । [तथा] । (इति निष्क्रम्य तया सह प्रविशति) ।

चित्र०—एसा अहाण पिअसही बाणपुत्ती तुम्हे पणमइ । [एषाऽस्माकं प्रियसखी बाणपुत्री युष्मान् प्रणमति ।]

बलभद्रः—सौभाग्यवती भूयात् ।

अनि०—अवश्य, अवश्य ।

[तखन बलभद्र ओ प्रद्युम्नक संग गरुड़ पर चढ़ल श्रीकृष्ण ओ नारद प्रवेश करैत छथि ।]

नारद—इयेह नागपाश मे बान्हल अनिरुद्ध छथि । से हिनका नागपाश सँ गरुड़ छोड़ाबथु ।

गरुड—बेस । (लग जाइत छथि, नाग सभ भगैत अछि ।)

अनि०—इयेह हम अनिरुद्ध अहाँलोकनिकेँ प्रणाम करैत छी ।

बलभद्र—सब दिन कल्याण प्राप्त करू ।

कृष्ण—आ हमरालोकनिक पुतोहू बाणपुत्री कतय छथि ? चित्रलेखा ! हुनका प्रवेश कराउ ।

चित्र०—बेस । (बहार भय हुनका संग प्रवेश करैत छथि ।)

चित्र०—ई हमरासभक सखी बाणपुत्री उषा अहाँसभ केँ प्रणाम करैत छथि ।

बलभद्र—सौभाग्यवती होथु ।

कृष्णः—देवर्षे नारद ! किमतः परं विषयम् ?

नारदः—देव । स्वजनसमावेशनाय बाणपुत्र्यनिरुद्धाभ्यां सह झटिति द्वारवतीं गन्तव्या ।

कृष्णः—एवमस्तु ।

(इति सर्वे गमनमभिनयन्ति)

नारदः—कथं कृतकार्यैर्युष्माभिः क्षणमात्रेण द्वारवती प्राप्ता ।

कृष्णः—सर्वेश्वरस्य प्रसादात् ।

(ततः प्रविशति पुरस्त्रीभिस्सह रुक्मिणी)

रुक्मिणी—(सहर्षं कृष्णमभिनयति) अज्ज सम्पण्णमणोरहा अह बहुए बाणपुत्तीए दंसणेण । [अद्य सम्पूर्णमनोरथा अहं बध्वा बाणपुत्र्या दर्शनेन ।]

कृष्णः—एवमेव, सहनया सममनिरुद्धं नीराजयतु भवती ।

रुक्मिणी—तथा । [तथा ।] (इति नीराजयति ।)

गीत चुमाओन आरती--४१

पुरब-जनम-तप समुचित, आज सुमङ्गल भेल ।
लय नागरि यदु-बालक, हरषित दरशन देल ॥

कृष्ण—देवर्षि नारद ! आब की करक चाही ?

नारद—देव ! अपनालोकक आश्चर्यजनक लेल बाणपुत्री ओ अनिरुद्धक संग झटदय द्वारका चली ।

कृष्ण—एहिना हो ।

[सभ जनबाक अभिनय करैत छथि ।]

नारद—की कार्यसम्पादन कय अहाँलोकनि क्षणे भरि मे द्वारका पहुँचि गेलहुँ ?

कृष्ण—सब अपनेक कृपा सँ ।

[तखन नगरनारीसभक संग रुक्मिणी प्रवेश करैत छथि ।]

रुक्मिणी—(सहर्षं कृष्णक प्रति) हम बधू बाणपुत्रीक दर्शन सँ पूर्णमनोरथ भेलहुँ ।

कृष्ण—से ठीके । त हिनका संग अनिरुद्धकेँ अहाँ आरती करू ।

रुक्मिणी—बेस । (आरती करैत छथि ।)

[गीत सं०—४१]

पुरब-जनम-तप = पूर्व जन्मक तपस्याक । नागरि=सुन्दरी नायिका

आनन्द भरल नगर भरि, भूषण वसन समारि ।
यदुपति-भवन गमन करि, कर कौतुक नर नारि ॥
कनक-कलस पुरहर करि, मणिमय दीप बराए ।
दूबि अक्षत कर लय कहुँ, चानन भवन लिपाए ॥
नगर नारि यदु-बालक, नागरि सहित सुभाव ।
हर्षनाथ भल मन दय मिथिलापति बुझु भाव ॥

नारदः—(कृष्णप्रति) किन्ते भूयः प्रियमुपकरोमि ।

कृष्णः—अतःपरमपि प्रियमस्ति ? तथापीदमस्तु—

राजानः परिपालयन्तु वसुधाधर्म्मेण सर्व्वे जनाः
स्वीयकर्म्म समाचरन्तु समये वर्षन्तु धाराधराः ।
एतद्वर्णनिबद्धनाटकरसास्वादानुरक्तादिकं
भूयासु निरपत्रपास्सहृदया भूरस्तु धान्यान्विता ॥१३॥

नारदः—एवमस्तु ।

(उषा) । यदुबालक अनिरुद्ध वसन वस्त्र । समारि सजा कय । यदुपति-भवन कृष्णक घर । कौतुक= उल्लास । कनक-कलस =सोनाक घैल । पुरहर=मङ्गल घट ॥

नारद—(कृष्णक प्रति) अहाँक आओरो अधिक प्रियकाज हम की करी ?

कृष्ण—एहू सँ अधिक प्रिय होइछ ? तैयो ई होअओ—

राजालोकनि पृथ्वीक लोकजकाँ रक्षा करथु, सब लोक धर्म सँ अपन काज करओ, मेघ उचित समय पर बरिसओ, एहि कथानक सँ निबद्ध नाटकक रसास्वादन मे अनुरक्त सहृदयलोकनि उपद्रव-रहित (लाजिभय) होथु ओ पृथ्वी धान्य सँ युक्त हो ॥१३॥

नारद—एहने हो ।

(इति निष्क्रान्तास्सर्व्वे)

इति द्वारकाप्रस्थानगमनो नाम पञ्चमोऽङ्कः ।

इति श्रीहर्षनाथकविविरचितमुषाहरणनाम
नाटकम्परिपूर्णम् ॥

[सब बहार भय गेल ।]

॥ द्वारका घुरब नामक पाँचम अङ्क समाप्त ॥

इति श्रीहर्षनाथ कविक बनाओल उषाहरण नामक
नाटक पूर्ण भेल ॥

★★

परिशिष्ट

हर्षनाथकविक उज्झट गीत

१—श्रीभगवतीक

जय जय त्रिभुवनवासिनि ।
तमुरुचि - निन्दित - दामिनि ॥१॥
आनन शशधर - मण्डल ।
सोभि नयन, श्रुति कुण्डल ॥२॥
कनक - कुशेशय आसन ।
वसय निकट पञ्चानन ॥३॥
शोभ चक्र निरभय वर ।
कर शुभ कमधर शेखर ॥४॥
तुअ पद पङ्कज मधुकर ।
हर्षनाथ भन कविवर ॥५॥

२—श्रीतारक

जय जय भवहरनि मञ्जु-
हासिनि । मधु - वमन - कञ्ज-
आसन - शिव - सेवित - पद - कमल तारिणी ॥ध्रु०॥

नवल जलद मञ्जु भास,
उज्वलित शेष भूमिवास
मुण्डमाल अति विलास, विपदहारिणी ॥१॥

सोम नयन अरुन वरन,
विश्वव्यापि सलिल सरन ।
ललित शमन कमल - युगल - चरणधारिणी ॥

लम्ब उदर खर्ग रूप,
द्वीपि अजिन कटि अनूप ।
चपल - रसन विकट वदन, दुरितदारिणी ॥२॥
मुद्रापञ्च ललत माथ,
खड्ग कान्ति दहिन हाथ ।
वाम भुज कुवल मौलि, अक्षोभधारिणी ।
भनत हर्षनाथ नाम,
जनक नगर नृपति काम ।
पुरिअ परम करुणधाम, भक्तताारिणी ॥३॥

३ — श्री कृष्णजन्मोत्सव

(सोहर)

(पद) अधिरल जलधर गरजत, घनरस बरिसत रे ।
दादुल संकुल रुममल दामिनि चमकत रे ॥ललना॥
(छन्द) तड़ित चमकत, जलद गरजत, करत दादुल सोर ओ ।
निमिर सङ्कुल, करत आकुल, निशिअ भादव घोर ओ ॥१॥
(पद) अवतरु देहकिलन्धत, जन सुख चन्दन रे ।
सुरवर मुनि कृतवन्दन, कंस-निकन्दन रे ॥ललना॥
(छन्द) अवतरल यदुकुल कमल दिनकर, सकल जन सुखकन्द ओ ।
नन्द भवन, चकोर लम्पट, पुरन सारद चन्द ओ ॥२॥
(पद) अमल कमल दल गञ्जन, लोचन खञ्जन रे ।
त्रिभुवन आपद भञ्जन, जग असुरञ्जन रे ॥ललना॥
(छन्द) जगत रञ्जन, विपदभञ्जन, वदनमण्डित पान ओ ।
नवल जलधर, रुचिर तनुवर, विजित मृगमद मान ओ ॥३॥
(पद) माह-छिनाओल दगरिन कत जन पाओल रे ।
हरषित बोल बधूजन, सोहर गाओल रे ॥ललना॥
(छन्द) हरषि गावहि, नगर नागरि, करहिं सुरतरु ज्ञान ओ ।
सुनत निश्चल, रहत लगमृग, छूटत मुनिजन ध्यान ओ ॥४॥

(पद) मनि मानिक मुकता कत, कञ्चन भाजन रे ।
जत छल नन्द भवन धन, पाओल गुनिजन रे ॥ल०॥
(छन्द) तुरग गजरथ, कनक मानिक, रतन मुकता साथ ओ ।
पाबि नटभट मणक चटपट, भेल सकल सनाथ ओ ॥५॥
(पद) सुरगण सहित पुरन्दर, करि खुब डम्बर रे ।
देखल यदुकुल सुन्दर, आएल अम्बर रे ॥ल०॥
(छन्द) बरिस सुरगण, कुसुम परसल, मुदित पुलकित अंग ओ ।
देव-दुन्दुभि, बाजु अम्बर, होत मंगल रङ्ग ओ ॥६॥
(पद) हर्षनाथ भन मनदय, हृदि परसल जय रे ।
करथु नृपति लक्ष्मीश्वर, जन जन उपचय रे ॥ल०॥
(छन्द) हर्षनाथ सनाथ करि, यदुनाथ त्रिभुवनधाम ओ ।
पुरथु मिथिला, नगर नायक सकल अभिमत काम ओ ॥७॥

उचिती

सुपुरुष हृदय विचारि रे ।
सुनिअ वचन अवधारि रे ॥१॥
सनि मोर परम अजान रे ।
राघव - हिनक अभिमान रे ॥२॥
परय हिनक जेओ रोष रे ।
करिअ छकर अनु रोष रे ॥३॥
सहय लाख अपराध रे ।
सुजन नेह नहि बाध रे ॥४॥
हर्षनाथ कवि भाख रे ।
मिथिलापति रस जाख रे ॥५॥

—(उपाहरण-गीत—२८)

५—नायिका वर्णन

देखल सुहागिन दाना ।
पूरल लोचनकामा ॥१॥

आनन शारद चन्दा ।
लखि मुनिहुक मति मन्दा ॥२॥
अनुपम भौंह कमाने ।
लोचन विषमय बाने ॥३॥
मधुर सुधारस भासे ।
रसमय वचन विलासे ॥४॥
कुचयुग पङ्कज काँती ।
रोमावलि अलि - पाँती ॥५॥
उर कदलीसम सोहे ।
मन्द गमन मन मोहे ॥६॥
हर्षनाथ कवि भाने ।
मिथिलापति रस जाने ॥७॥

६--विरह

अविरल सरस बरिस जलबिन्दु ।
जलधर निकर मगन भेल इन्दु ॥ ॥
कुन्द कुमुद परिमल लय धीर ।
सरस समय वह मलय समीर ॥२॥
नाचत शिखिगन उपवन जाए ।
पहु परदेश मोहि किछु न सोहाए ॥३॥
जे निश पहुसँग छन सम मान ।
से भेल तनि विनु कलप समान ॥४॥
एहन निठुर पहु आव न गेह ।
अनुखन भवन दहन वह देह ॥५॥
रसमय हर्षनाथ कवि भान ।
नृप लक्ष्मीश्वरसिंह रस जान ॥६॥

७--प्रथम-समागम

प्रथम समागम जिव मोर काँप ।
जनि सर भवन चढ़ाओल चाप ॥१॥

हम न जाएब सखि सुपुरुष पास ।
सुमरि सुमरि हिय बहुत तरास ॥२॥
कमल कली मधुकर अति जोरा ।
हरि पुनु केलिक कएल निहोरा ॥३॥
हर्षनाथ सुपुरुष अभिरोष ।
मालति छमिअ भमर सम दोष ॥४॥

८--विरह

समय वसन्त पिआ परदेश ।
असह सहब कत विरह कलेश ॥१॥
सुमरि सुमरि पहु रहय न धीर ।
मदन - दहन वह दगध शरीर ॥२॥
अलिकुल गुञ्जित कुसुमित कुञ्ज ।
लागु नयन जनि पावक - पुञ्ज ॥३॥
शीतल पंकज चम्पक - माल ।
हृदय दहय जनि विषधरजाल ॥४॥
रसमय हर्षनाथ कवि भान ।
नृप लक्ष्मीश्वरसिंह रस जान ॥५॥

९--उत्कण्ठा

हम कि कहब सखि तोरा, चित चोरा
आनि मिलाविअ मोरा ॥१॥
पहु विनु चित नहि धीरे, नहि छोरे,
देह वह दहन - समीरे ॥२॥
कओन कुमति मोहि भेला, जिह खेला,
पहु विमुख करि हेला ॥३॥
जे धनि कर गुण माने, नहि जाने
तनु मन मनु कि पराने ॥४॥

फेरि न करब इह काजे यदुराजे,
जओं पुनि होएत समाजे ॥३॥
हे सखि ! करहु उपाई, यदुराई,
एक बेरि देहु मनाई ॥६॥
हर्षनाथ कवि भाने, परमाने,
रस भावुक रस जाने ॥७॥

१०--सौन्दर्य

आज देखल एक कामिनि रे,
नव दामिनि रेखा ।
नील वसन लखि अवतरु रे,
जनि जलद सन्देहा ॥
तड़ित बेकत होअ निज रुचि रे,
परगासल कामा ।
तसु तनु लखि लज्जित होअ रे,
पुनु पुनु गतधामा ॥
विगत गिरिश-मदनानल रे,
जनि लज्जित धाने ।
तसु मुख लखि नहि दह जन रे,
सह निज अपमाने ॥
अमल कमल दल मञ्जन रे,
लखि नयन विलासे ॥
जनि लज्जित भय खञ्जन रे,
कर विपिन निवासे ॥
हर्षनाथ कविशेखर रे,
रसमय इहो गावे ।
लक्ष्मीश्वरसिंह गुणमय रे
मनसय कुसु भावे ॥

(११)

तड़ित लता सम सुन्दरि सजनी, देखल अति अभिराम ।
लोचन-जुगल जुड़ाएल सजनी, लखि तसु तनु अनुपाम ॥१॥
वदन मनोरम राजित सजनी, लोचन - युगल विशेष ।
जनि सरसीरुह बैसल सजनी, मधुकर - युगल सुवेष ॥२॥
चलति रोमावलि विषधरि सजनी लोचन खञ्जन लाभ ।
लखि नासिक पन्नगरिपु सजनी, कुच गिरितट छवि शोभ ॥३॥
करण रतन नव नूपुर सजनी, आगत अति अभिराम ।
जनि सरसिज-दल रवकर सजनी, मधुकल मानस-धाम ॥४॥
जगत-जननि पद सेवक सजनी, हर्षनाथ कवि गाव ।
रसमय लक्ष्मीश्वरसिंह सजनी, नृप बुझ मन दय भाव ॥५॥

१२--विरह

आन अराउ मदन तन दाहु,
बरिसत मेघ विरह भेल गाहु ॥
गरजत घन तन लहरत मोर,
परदेश बिलमहु नन्दकिशोर ॥१॥
रहब कोन बोली,
आलि हुनि श्यामसुन्दर बिनु किछु न सोहनी ॥ध्रु०॥
सावन सखि सब झलत हिलोर,
केलि करहु सखि पिया संग भोर ॥
चुनरि भिजल सखि पहिरु बनाय,
विरह अधिक तन सहलो न जाय ॥२॥
सोभव दिनराती,
आलि हुनि श्यामसुन्दर बिनु किछु न सोहाती ॥ध्रु०॥
भादव के घन गरजत घोर,
व्रज पर छाय घटा चहुँ ओर ॥
झिङ्गुर निशिदिन बोलत जोर
पीवन दादुर बोलय मोर ॥३॥

मदन मनोरथ मोती,
अलि हुनि श्यामसुन्दर बिनु किछु न सोहाती ॥ध्रु०॥
आसिन बलि हे आएल कन्त,
सुख सर से दुख भय गेल अन्त ॥
हर्षनाथ मन मन में आस
प्रीति लगहु हो प्रीतम पास ॥४॥
जुड़ाएल छाती,
अलि हुनि श्यामसुन्दर बिनु किछु न सोहाती ॥ध्रु०॥

१३

सखि ! सखि अनुगत भेल ऋतुराजे ॥ध्रु०॥
पिक कुल कल, अनुरञ्जित नवदल,
कुसुमित कानन छाजे ॥१॥
अलि कुल कलित, ललित कुसुमाकुल,
विलसित वल्लि अनेके ।
एहन समय पहु, परदेस थिर रहु,
कि कहब तनिक विवेके ॥२॥
नृप-तनयापति, गोपसुता रति,
कए कोन परि बहुवाले ।
पसुपसुत-कृत, रहथि तिमिर नित,
विवित भेल से काले ॥३॥
तेजि गेल मधुपति, कपल खचित अति,
असित हृदय थिक बाँके ।
कोकिल निज हित, अनुदिन परिचित,
नवदल तेजथि काके ॥४॥
धीरज धय रहु, अचिर मिलत पहु,
होएत विरह - अवसाने ।
नृप लक्ष्मीश्वरसिंह बुझथि रस,
हर्षनाथ कवि भाने ॥५॥

१४

सखि सखि कहिअ कओन परकारे ।
पहु परदेस भेल, सरस समय भेल, हनय मदन दुरवारे ॥१॥
धान किरन तन, वहय समीरन, चन्दन चम्पक दामे ।
कि करब के कहु, बिमुख देखि पिहु, सकल जगत भेल वामे ॥२॥
नलिन-विजन तन विषम गरल सन, श्रुति रहु कोकिल गाने ।
मदन वेदन तन, असह सहब कत, छन छन निकसत प्राने ॥३॥
धैरज धय रहु, अचिर मिलत पहु, होयत विरह अवसाने ।
नृप लक्ष्मीश्वरसिंह बुझथि रस, हर्षनाथ कवि भाने ॥४॥

१५--अनुराग

कि कहब दुहुक प्रथम अनुरागे ।
प्रथम विलोकन अवधि दुहुक मन कत अनुखन रस जागे ॥१॥
मदन विषम सर, दहित दुहुक तन, दुहु मन वसु एक काजे ।
दुहुक मिलित मन, रहय सतत छन, आँतर भय रहु लाजे ॥२॥
विरह दहन कत, विषम पराभव, हृदय धरय जत गोई ।
खञ्जरीट चापल मद गञ्जन, नयन बेकत तन होई ॥३॥
मलय पवन शशि किरन सरोरुह, परस दुहुक तन छीने ।
असह सहओ कत, रहय विकल नित, एकओ न अपन अधीने ॥४॥
प्रथम वचन नहि, कहय एकओ नहिं, दुहु मन करि अभिमाने ।
नृप लक्ष्मीश्वरसिंह बुझथि रस, हर्षनाथ कवि भाने ॥५॥

१६--मान

करिअ न हृदय कठोर ।
अवगुन परिहरि परसनि भय धनि, (मानिनि) पूरिअ अभिमत मोर ॥१॥
सरस वसन्त निहारि जगत भरि, परिहरि प्रिय जन दोष ।
सागर नागरि रमय रहनि भरि, तेहि धनि तेजह न रोष ॥२॥

एक बेरि बचन अमिअ सम भाषिअ, पिक कुल तेजओ गान ।
सरस विलास हास परगासिअ, अमिअ तेजओ अभिमान ॥३॥
याचक जन नहि करय विमुख धनि, मन गुनि बुझिअ सेआनि ।
मधु तेजि मधुकर, फिरय कंटक डर, केतकि को थिक हानि ॥४॥
यामिनि बिति गेल, भोर समय भेल, आब तेजहु धनि मान ।
नृप लक्ष्मीश्वरसिंह बुझयि रस, हर्षनाथ कवि भान ॥५॥

१७--सौन्दर्य

माधव[1] देखल अपरुप रूपे ।
नील बसनि धनि, जलद वलित जनि, थिर रहु तड़ित सरूपे ॥ ॥
सिन्दुरबिन्दु भाल पर तापर, रचित चिकुर परिपूरे ।
राहुवदन डर आए नुकाएल, तिमिर निकर जनि सूरे ॥२॥
नूपुर पयरज पद शिञ्जित, ललित नयन श्रुति कुञ्जे ।
नयन भेद कह, पुलक अंग महु, कनक विशेषक पुञ्जे ॥३॥
कुच युग कनक कलश सद गञ्जन निरखि उपजु मन शंका ।
तीनि भुवन जनि, जीति मदन जनि, कयल अगोमुख डंका ॥४॥
तसु तनु रचल मदन जनि रसमय, को रस लम्पट चाने ।
जप तप निरत सतत रस वञ्चित, की विह रचत अजाने ॥५॥
नव-पल्लव गञ्जन मनरञ्जन, अधर बिम्ब निरमाने ।
नृप लक्ष्मीश्वरसिंह बुझयि रस, हर्षनाथ कवि भाने ॥६॥

१८ – नायिकाक अनुनय

किअ भैलहि मुख फेरि ॥ध्रु०॥
मुख रो चीर दूर करि सुन्दरि, हरखि हेरु एक बेरि ॥ ॥
आनन मलिन निहारि तोहर धनि, घूमय फिरय सब ठाम ।
तुअ मुख चान चकोर भोर मन, कतहु न कर बिसराम ॥२॥

१—द्रष्टव्य—'माधवानन्द' गीत सं०—१५

चान किरन चम्पक दल चन्दन, कोकिल पञ्चमगान ।
तुअ विरहित मन, हेरयित अनुक्षन, लगइछ अनल समान ॥३॥
मोर अपराध परल जैओ सुन्दरि, किअ परितेअहु हार ।
आनक दोष आन परि तेजहु, के कह एहन विचार ॥४॥
यामिनि बिति गेल, भोर समय भेल, अबहु तेजु धनि मान ।
नृप लक्ष्मीश्वर सिंह बुझयि रस हर्षनाथ कवि भान ॥५॥

१९--नायिका-वर्णन

आइत[1] देखल मय नागरि रे, नवकञ्चन रेहा ।
त्रिभुवन विजय मनोरथ रे, जनि रचल विदेहा ॥ ॥
लसत कुटिल कच लोचन रे, के कह उपमाने ।
मीन युगल बनसी लय रे, वेधल पचबाने ॥२॥
ललित कोर मुख पंकज रे, छवि देत विशेसा ।
जनि पूरन शारद शशि रे, दामिनि परिवेसा ॥३॥
नृवजन मानस हाटक रे, जनुक्षन कर चोरी ।
ते जनि कुच-युग बान्हल रे, दृढ़ कंचक डोरी ॥४॥
हर्षनाथ मनमय कह रे, नागरि अनुपामा ।
पुरुष जनम तप देखल रे, लोचन अभिरामा ॥५॥

१—द्रष्टव्य—'उषाहरण'—गीत सं०—२७ ।